



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 266]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 10, 2004/कार्तिक 19, 1926

No. 266]

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 10, 2004/KARTIKA 19, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 नवम्बर, 2004

निर्णायक समीक्षा अंतिम जांच परिणाम

विषय : इटली, स्पेन, पुर्तगाल और जापान के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित एक्रिलिक फाइबर के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा।

सं० 15/4/2003-डीजीएडी— यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी भी कहा गया है) 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति विधायन) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) के अंतर्गत जापान, स्पेन, पुर्तगाल और इटली (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित आईटीसीएचएस वर्गीकरण के उप-शीर्ष 5501.30 और 5503.30 के अंतर्गत आने वाले एक्रिलिक फाइबर (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की जाँच और सिफारिश करते हैं। प्राधिकारी के अंतरिम जांच परिणाम दिनांक 20 अक्टूबर, 1998 की अधिसूचना सं० 32/1/97-एडीडी द्वारा प्रकाशित किए गए और दिनांक 17.11.1998 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं० 90/98 द्वारा सम्बद्ध वस्तु पर अनन्तिम शुल्क लगाया गया था। प्राधिकारी ने 24 दिसम्बर, 1998 को अपने अंतिम जांच परिणाम निकाले और दिनांक 04.05.1999 की अधिसूचना सं० 53/99-सी.शु. द्वारा यथासंशोधित दिनांक 22.01.1999 की अधिसूचना सं० 8/99 द्वारा केन्द्र सरकार द्वारा निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

2. और यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी को धारा 9क(5) के अंतर्गत बनाए गए अधिनियम और नियमों के अंतर्गत भारत में एक्रिलिक फाइबर के निम्नलिखित उत्पादकों अर्थात् मै० इंडियन एक्रिलिक लि०, चंडीगढ़; मै० कंसोलिडेटेड फाइबर एंड कैमिकल्स लि०, कोलकाता और मै० पशुपति एक्रिलिक लि.; नई दिल्ली की ओर से एक्रिलिक फाइबर विनिर्माता मंच से एक आवेदन प्राप्त हुआ जो ऊपर उल्लिखित अधिसूचनाओं के अंतर्गत सम्बद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को आगे 5 वर्षों की अवधि के लिए जारी रखने के लिए निर्णायक समीक्षा जांच की शुरुआत करने के बारे में था। अन्य भारतीय उत्पादकों में से एक अर्थात्

मै0 वर्धमान एक्रिलिक्स लि0 ने एक्रिलिक फाइबर विनिर्माता मंच द्वारा दायर आवेदन का समर्थन किया । प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से किए गए अनुरोध के आधार पर यह निर्धारित करने के लिए कि क्या शुल्क की समाप्ति पाटन और क्षति को जारी रखने अथवा उसके दोबारा उत्पन्न होने को बढ़ावा देगी, उपर्युक्त संबद्ध देशों के विरुद्ध लागू शुल्क के संबंध में पाटनरोधी निर्णायक समीक्षा जांच आरम्भ करते हुए दिनांक 03.09.2003 को भारत के राजपत्र, असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना जारी की ।

3. और यतः पाटनरोधी शुल्क दिनांक 4.5.1999 की अधिसूचना सं. 53/99 सी.शु. द्वारा यथासंशोधित दिनांक 22.1.99 की अधिसूचना सं. 8/99 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार दिनांक 22.10.2003 की अधिसूचना सं. 158/2003 द्वारा 16 नवम्बर, 2004 तक बढ़ा दिया गया था ।

क. मामले की पृष्ठभूमि

4. मै0 जे.के. सिंथेटिक लि0 के साथ भारत में उपर्युक्त घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत एक आवेदन के आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने ऊपर उल्लिखित देशों से पाटन, क्षति और आयातों के कारणात्मक संबंधों के बारे में जाँच की और पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंधों के अपने निर्धारण के आधार पर 24 दिसम्बर, 1998 को अपने अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किए । प्राधिकारी के जांच परिणामों पर कार्रवाई करते हुए केन्द्र सरकार ने दिनांक 22.1.1999 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 8/99 द्वारा सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया । तथापि, कुछेक हितबद्ध पक्षों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के जांच परिणामों और केन्द्र सरकार की अधिसूचना के विरुद्ध सीगेट के समक्ष अपील की । अनेक हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत याचिकाओं का निपटान करते हुए सीगेट ने अपने अंतिम जांच परिणामों के पैरा 55 के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा सिफारिश किए गए शुल्क को संशोधित किया । शुल्क को डॉलर के रूप में परिवर्तित कर दिया गया था । सीगेट के आदेशों पर कार्रवाई करते हुए केन्द्र सरकार ने दिनांक 4.5.1999 की अधिसूचना सं0 53/99-सी.शु. द्वारा शुल्कों को संशोधित किया ।

ख. क्रियाविधि

5. जाँच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है :-

- i. प्राधिकारी ने संगत सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रारंभिक जांच अधिसूचना के साथ प्रश्नावलियाँ भेजी ।
 1. मै0 अशाही कैमिकल्स इंडस्ट्री कं. लि., जापान
 2. मै0 कोमत्सुया कॉरपोरेशन, जापान
 3. मै0 फाइब्रास सिमटेटिकास डी पुर्तगाल, पुर्तगाल
 4. मै0 कोरटॉल्ड्स यूरोपीयन्स फाइबर, स्पेन
 5. मै0 मॉन्टी फाइबर एसपीए, इटली
- ii. नई दिल्ली में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल सहित सम्बद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों/सम्बद्ध देशों के प्रतिनिधियों को नियम 6(2) के अनुसार जांच के आरम्भ होने के बारे में सूचित किया गया था और अपने संबंधित देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह देने का अनुरोध किया गया था । निर्यातकों को भेजे गए पत्रों, याचिकाओं और प्रश्नावलियों की प्रतियाँ ज्ञात निर्यातको/उत्पादकों की एक सूची के साथ सम्बद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को भी भेजी गई थीं ।

- iii. नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में सम्बद्ध वस्तु के ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियाँ भेजी गई थीं ।
- iv. यह जाँच 1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 (जाँच अवधि) की अवधि के लिए की गई थी । तथापि, क्षति संबंधी जाँच 1999-00 से 2002-03 की अवधि के लिए की गई थी ।
- v. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) और डीजीसीआईएंडएस से पिछले तीन वर्षों और जाँच की अवधि के लिए सम्बद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे जुटाने के लिए अनुरोध किया गया था ।
- vi. जाँच के उत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों से उनके विधायी प्रतिनिधियों से पत्राचार प्राप्त हुए थे :-
 - (क) मै0 मित्सुबिशी रयॉन कं. लि., जापान
 - (ख) मै0 जापान एक्सलान कं. लि., जापान
 - (ग) मै0 मारुबेनी कॉरपोरेशन, जापान

मै0 मित्सुबिशी रयॉन का उत्तर सभी प्रकार से अपूर्ण था और त्रुटि संबंधी अनुस्मारकों के बावजूद कंपनी ने प्रश्नावली का पूर्ण उत्तर नहीं दिया । जापान के अन्य दो निर्यातकों ने अपनी प्रश्नावली का उत्तर दिया किन्तु दिनांक 7 अप्रैल, 2004 और 22 अप्रैल, 2004 के उनके पत्रों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों की सत्यापन आवश्यकता के संबंध में प्राधिकारी के पत्राचार का कोई जवाब नहीं दिया । दिनांक 30 अप्रैल, 2004 के उनके पत्र द्वारा कंपनी के प्रतिनिधियों ने सूचित किया है कि उनके ग्राहकों के एक्रिलिक फाइबर विभागों में भारी अदला-बदली के कारण वे सत्यापन के लिए किसी तारीख की पुष्टि करने में असफल रहे थे और उन्होंने अपने ग्राहकों को सलाह दी है कि जाँच समयबद्ध होने के कारण प्राधिकारी पाटनरोधी नियमों के नियम 6.8 के अंतर्गत उपलब्ध उत्तम सूचना के आधार पर निर्णय करेंगे । उत्पादन की लागत का सत्यापन व्यापार की सामान्य अवस्था में निर्यात के देश में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पाटनरोधी जाँच के लिए एक अनिवार्य घटक है । चूंकि शामिल निर्यातकों ने अपने आंकड़ों के सत्यापन के लिए सहयोग नहीं किया था इसलिए उनके द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली उत्तर पर भरोसा नहीं किया जा सकता और जापान के ऊपर उल्लिखित निर्यातकों को इस जाँच के प्रयोजनार्थ असहयोगी माना गया था । इन निर्यातकों ने सार्वजनिक सुनवाई में भी भाग नहीं लिया था किन्तु उनके परामर्शदाताओं ने अन्य द्वारा किए गए अनुरोधों के आधार पर सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात दो लिखित अनुरोध प्रस्तुत किए । इन निर्यातकों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों पर आवश्यक सीमा तक विचार किया गया है ।

(घ) मै0 फिसिसपी बार्सिलोना एस.ए., पुर्तगाल ने सूचित किया है कि उन्होंने भारतीय बाजार को छोड़ने का निर्णय लिया है और इसलिए प्रश्नावली का उत्तर देने को प्राथमिकता नहीं देते हैं ।

(ड.) मै0 असाही केसेई कॉरपोरेशन, जापान ने सूचित किया है कि वे अब सम्बद्ध वस्तु के निर्यातक अथवा उत्पादक नहीं हैं और इसलिए जाँच में भाग लेने के इच्छुक नहीं हैं ।

(च) ऊपर उल्लिखित देशों में से किसी निर्यातक ने जाँच शुरूआत अधिसूचना का किसी भी प्रकार उत्तर नहीं दिया है ।

- vii. आरंभिक जांच अधिसूचना के जवाब में सम्बद्ध वस्तु के निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने अपने अनुरोध प्रस्तुत किए हैं :
- मै0 राजस्थान स्पिनिंग मिल्स लि0 ने इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन के माध्यम से
 - इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन और लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन ने भी जाँच की विभिन्न अवस्थाओं में अपने अभ्यावेदन प्रस्तुत किए हैं ।
- viii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों द्वारा जांच के लिए रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश उपलब्ध रखे;
- ix. सम्बद्ध वस्तु के अन्य भारतीय विनिर्माताओं अर्थात् मै0 वर्धमान एक्रिलिक लि0 और मै0 आई.पी.सी.एल., जिन्होंने आरम्भ में जाँच में भाग नहीं लिया था और समीक्षा के लिए आवेदक के रूप में भाग लिया, से प्राधिकारी द्वारा उनकी लागत और क्षति तथा क्षति रहित कीमत की व्यापक जांच के लिए अन्य संगत आंकड़ों के लिए अनुरोध किए गए थे । यतः मै0 वर्धमान एक्रिलिक ने बाद में अपने लागत संबंधी आंकड़े प्रस्तुत किए और समीक्षा के लिए आवेदन के समर्थक के रूप में अन्य आवेदकों के साथ शामिल हो गए । मै0 आईपीसीएल ने बहुत सीमित सूचना उपलब्ध कराई, जिस पर आवश्यक समझी गई सीमा तक विचार किया गया ।
- x. प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग और समर्थक पक्षों द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन किया ताकि सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) तथा आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर उत्पादन की इष्टतम लागत और भारत में सम्बद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत का हिसाब लगाने के लिए लागत जांच भी की गई ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- xi. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों को मौखिक सुनवाई के लिए 2.4.2004 को एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों, सम्बद्ध वस्तु के आयातकों/प्रयोक्ताओं और यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया गया । तथापि, सम्बद्ध देशों के किसी भी निर्यातक, यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल के एक प्रतिनिधि को छोड़कर, ने सार्वजनिक सुनवाई में भाग नहीं लिया । सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षों से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में प्रकट करने का अनुरोध किया गया था । हितबद्ध पक्षों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर इस जांच परिणाम में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है ।
- xii. उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित अनिवार्य तथ्यों और निर्धारण के आधार को दिनांक 15 अक्टूबर, 2004 के पत्रों द्वारा शामिल पक्षों को सामान्य प्रकटन और गोपनीय प्रकटन पत्रों द्वारा ज्ञात हितबद्ध पक्षों के समक्ष प्रकट किया गया था । हितबद्ध पक्षों से प्राप्त प्रकटन पत्र की टिप्पणियों पर भी इन जांच परिणामों में आवश्यक समझी गई सीमा तक विचार किया गया है और विभिन्न पक्षों द्वारा दिए गए तर्कों और दावों को साक्ष्य और आंकड़ों से प्रमाणित किया गया है ।
- xiii. चिह्न इस अधिसूचना में गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और नियमों के अंतर्गत इसे ऐसा माना गया है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद और " समान वस्तु "

6. मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद और प्राधिकारी के अंतिम जांच परिणामों के आधार पर पाटनरोधी शुल्क लगाने वाला उत्पाद सिकुड़ने वाले और न सिकुड़ने वाले रूप दोनों में एक्रिलिक फाइबर है जो 1.5 डेनियर से 8 डेनियर के बीच का है और इसमें टो, टॉप और स्टेपल्स फाइबर शामिल हैं।" वह उत्पाद आई टी सी एच एस वर्गीकरण सं. 5501.30 और 5503.30 के अंतर्गत वर्गीकृत है।

ग.1. याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार

ग.1.1. याचिकाकर्ता के विचार

7. आवेदकों ने तर्क दिया है कि अपने सीमाशुल्क उपशीर्षों के बावजूद वर्तमान जांच में शामिल उत्पाद एक्रिलिक फाइबर है। एक समीक्षा जांच होने के कारण वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद वैसा ही होना चाहिए जैसा वह मूल जांच में था। उन्होंने आगे तर्क दिया है कि उत्पाद के दायरे को भी इस मामले में अपीलीय निकाय द्वारा निर्धारित किया गया है और इसलिए इस मामले पर आगे विचार करने की कोई गुंजाइश नहीं है।

ग.1.2. निर्यातकों के विचार

8. किसी भी निर्यातक से पूरा सहयोग नहीं मिला है और इस मुद्दे को किसी भी निर्यातक द्वारा उनके सीमित अनुरोधों में नहीं उठाया गया है।

ग.1.3. आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार

9. इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन ने प्राधिकारी के समक्ष अपने अनुरोधों में तर्क दिया है :

- यह कि घरेलू उद्योग ने दो विभिन्न मदों अर्थात् एचएसएनसं. 5503.3000 वाला एक्रिलिक / मॉडएक्रिलिक फाइबर और शीर्ष सं. 5501.3000 के अंतर्गत आने वाला सिंथेटिक फिलामेंट टो को जोड़ दिया है।
- जबकि सम्बद्ध वस्तु में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत आने वाली दो भिन्न व्यापार वर्गीकरण संख्याओं वाली दो अलग और भिन्न मदें शामिल हैं, कीमत, उत्पादन इत्यादि के संबंध में घरेलू उद्योग से संबंधित आंकड़े केवल एक्रिलिक फाइबर से संबंधित हैं। इसने जांच को पूरी तरह व्यर्थ कर दिया।
- यह कि सार्वजनिक सुनवाई के दौरान घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि द्वारा यह माना गया कि फिलामेंट टो को फाइबर बनने से पहले एक और प्रक्रिया से गुजरना होता है।
- यह कि दोनों की कीमतों में लगभग 8/- रु. प्रति कि.ग्रा. का अंतर है। सम्बद्ध देशों के मूल के/निर्यातित टो और फाइबर की औसत कीमत को ध्यान में रखते हुए और उसी समय घरेलू उद्योग के संबंध में केवल फाइबर की कीमत को ध्यान में रखते हुए कीमत तुलना पूरी तरह व्यर्थ हो गई क्योंकि टो और फाइबर की कीमतों में लगभग 8/- रु. प्रति कि.ग्रा. का अंतर तुलना को व्यर्थ कर देता है।

- यह कि बाजार हिस्से की गणना करते समय आयातों की मात्रा में आयातों के मामले में फाइबर और टो दोनों शामिल होंगे जबकि घरेलू उद्योग के मामले में इसमें केवल फाइबर शामिल होंगे । इसने तुलना को व्यर्थ कर दिया और इसके लाभों ने परिणामों को भ्रमित किया है ।
- यह कि आयात आंकड़ों के प्रयोजनार्थ दोनों मदों को मिलाकर और घरेलू उद्योग के प्रयोजनार्थ केवल एक मद को ध्यान में रखने ने पूरी जांच व्यर्थ कर दी है ।

10. उनके प्रकटन के बाद के अनुरोधों में हितबद्ध पक्षों ने इन आधारों पर टो और फाइबर के अलग होने संबंधी अपने आधार को पुनः दोहराया है कि एक्रिलिक फाइबर और टो दो अलग और भिन्न मदें हैं जो दो भिन्न आई टी सी वर्गीकरणों में शामिल हैं और उनके अलग अलग प्रयोग हैं । जबकि टो बुनाई उद्योग में कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है, फाइबर का उपयोग कॉटन स्पिनिंग पद्धति में काम करने वाले स्पिनर्स द्वारा किया जाता है । निटिंग यार्न का प्रयोग निटिड फैब्रिक्स के विनिर्माण के लिए किया जाता है । जबकि स्पिन यार्न का प्रयोग बुने हुए वस्त्रों के विनिर्माण के लिए किया जाता है । अतः यह तर्क दिया गया है कि गुणवत्ता, विशेषताएं, कीमत और इन दो उत्पादों की परिणामी मितव्ययिता पूरी तरह अलग है ।

ग.2. प्राधिकारी द्वारा जांच

11. प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के उत्तर में किए गए अनुरोधों सहित विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के मुद्दे पर याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों और आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचारों पर ध्यानपूर्वक विचार किया है ।

12. इस जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद " एक्रिलिक फाइबर सिकुड़ने और न सिकुड़ने वाले दोनों रूप में, 1.5 डेनियर से 8 डेनियर के बीच का और इसमें टो, टॉप और स्टेपल फाइबर शामिल हैं" इस मामले को मूल जांच के अंतिम जांच परिणामों और बाद में सीगेट के आदेशों में पूरी तरह विचार और निपटान कर दिया गया था । इसके अलावा यह एक निर्णायक समीक्षा जांच होने के कारण जांच का दायरा मूल जांच में पहले ही अभिज्ञात उत्पाद तक सीमित है ।

13. उत्पाद अर्थात् टो और फाइबर का विनिर्माण समान विनिर्माण प्रक्रिया द्वारा किया जाता है यद्यपि फाइबर के लिए स्टेपल लम्बाइयों के लिए क्रिम्पिंग और कटिंग के सूक्ष्म इंक्रिमेंटल प्रसंस्करण की अपेक्षा होती है । कीमत विभेदक अनिवार्यतः शामिल इंक्रिमेंटल प्रक्रिया के कारण है और विभेदक मामूली पाया गया है । इस जांच के प्रयोजनार्थ एक्रिलिक फाइबर और टो की भारित औसत लागत को निर्यातों के देशों से सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की सभी तुलनाओं के लिए ध्यान में रखा गया है । इस प्रकार, घरेलू उद्योग और आयातों की लागत तुलना को उचित और पर्याप्त माना गया है । घरेलू उद्योग मांग के अनुसार अलग-अलग अनुपातों में टो और फाइबर दोनों का उत्पादन करता है । यह अपीलीय निकाय में भी निपटाया गया मुद्दा होने के कारण प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद अथवा समान वस्तु में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने का कोई कारण नहीं पाते हैं ।

घ. जाँच की शुरुआत और घरेलू उद्योग की स्थिति

14. यह समीक्षा अधिनियमों की धारा 9क(5) के साथ पठित पाठनरोधी करार की धारा 11.3 के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से प्रस्तुत यथा प्रमाणित अनुरोध के आधार पर आरम्भ की गई है और इसे किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा चुनौती नहीं दी गई है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एक निर्णायक समीक्षा अनुरोध में स्थिति एक मुद्दा नहीं है।

ङ. प्राधिकारी के समक्ष मुद्दे

15. इस अधिनियम की धारा 9क(5) में यह व्यवस्था है कि निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी द्वारा इस बात की जाँच करना अपेक्षित है कि क्या ऐसे शुल्क को समाप्त करने से पाटन और क्षति के जारी रहने या इनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। अतः प्राधिकारी के समक्ष निर्धारणार्थ निम्नलिखित मुद्दे हैं :-

(क) क्या यदि निश्चयात्मक शुल्कों को हटाया या उनकी समय सीमा पूरी होती है तो पाटन के जारी रहने या इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

(ख) क्या यदि निश्चयात्मक शुल्कों की समय सीमा पूरी हो जाती है या इन्हें हटाया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी रहने या इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

उपर्युक्त के आधार पर प्राधिकारी अगले पैराग्राफों में इन मुद्दों की जाँच आरम्भ करते हैं।

च. पाटन का जारी रहना या इसकी पुनरावृत्ति

च.1. आवेदक के विचार

16. अपनी निर्णायक समीक्षा जाँच में अमरीकी प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए आवेदक ने यह तर्क दिया है कि निम्नलिखित परिस्थितियों के मद्देनजर निर्णायक समीक्षा में सकारात्मक निर्धारण होगा :

(क) निश्चित शुल्क संबंधी आदेश के जारी होने के बाद पाटन 0.5% से अधिक किसी भी स्तर पर जारी रहा था;

(ख) आदेश के जारी होने के बाद आयात रुक गये हैं;

(ग) आदेश जारी होने के बाद से पाटन समाप्त हो गया था और आयात मात्राओं में भारी गिरावट आई थी।

17. आवेदकों ने यह तर्क भी दिया है कि जाँच अवधि में वास्तविक आयातों की मौजूदगी निर्णायक समीक्षा जाँच की पूर्वापेक्षा नहीं है जो सामान्यतः एक संभावना परीक्षण है न कि वास्तविक पाटन एवं क्षति जाँच। इस संबंध में उन्होंने बेलारूस से पॉलिस्टर स्टेपल फाइबर के मामले में ई सी के निर्णय का

उल्लेख किया है जिसमें यह मानते हुए कि शुल्क को वापस लेने से पाटन की पुनरावृत्ति होगी, उक्त प्राधिकारी ने शुल्क को तब भी जारी रखा जबकि उस देश से कोई आयात नहीं हो रहे थे। आवेदकों ने ब्राजील; भारत से जूट के थैलों के आयात, निर्णायक समीक्षा मामले का भी उल्लेख किया है जिसमें शुल्कों को जारी रखा गया है यद्यपि पूरी पाँच वर्ष की अवधि में भारत से कोई आयात नहीं हुए थे।

18. आवेदकों ने यह भी तर्क दिया है कि जापान से कोरोजन रेसिस्टेंट कार्बन स्टील उत्पादों पर पाटनरोधी शुल्कों की अमरीका की निर्णायक समीक्षा के मामले में डब्ल्यू टी ओ अपीलीय निकाय ने यह माना कि पाटनरोधी करार के अंतर्गत जांचकर्ता प्राधिकरणों के लिए ऐसा कोई दायित्व नहीं है जिसमें पाटन के जारी रहने की संभावना या उसकी पुनरावृत्ति की संभावना के निर्धारणार्थ पाटन मार्जिन की गणना या उन्हें आधार मानने की व्यवस्था हो।

19. सार रूप में आवेदकों के तर्क यह हैं कि निम्नलिखित परिस्थितियों में से किसी में भी अस्वाभाविक निष्कर्ष से पाटन के जारी रहने या पाटन की पुनरावृत्ति होने की संभावना बनी रहेगी।

(क) यदि किसी मामले में संगत अवधि में संबद्ध देशों से भारत को उत्पाद का निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया हो;

(ख) यदि किसी मामले में पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद उत्पाद के निर्यात रुक गये हों लेकिन निर्यातक देश के उत्पाद अन्य देशों में पाटित कीमतों पर उत्पाद का निर्यात कर रहे हों;

च. 2. निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

20. भारतीय स्पिनर्स एसोसिएशन ने अपने अनुरोध में यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को निर्यातक देश में सामान्य मूल्य का अनुमान संबद्ध देशों में प्रकाशित प्रतिष्ठित व्यापारिक पत्रिकाओं में दिए गए वास्तविक सौदावार आंकड़ों के आधार पर लगाना चाहिए था न कि टेकनॉन में दिए गए कीमत संबंधी आंकड़ों के आधार पर। उन्होंने उसके द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के बारे में टेकनॉन की योग्यता एवं प्रतिष्ठा पर प्रश्न उठाया है। उन्होंने यह तर्क भी दिया है कि टेकनॉन के आंकड़ों में एक क्षेत्र के लिए औसत कीमत दर्शाई गई है जो शामिल देशों के लिए प्रतिनिधि कीमत नहीं हो सकती है। उन्होंने जापान में कीमतों के प्रयोजनार्थ टेक्सटाइल हैंडबुक पर याचिकाकर्ताओं के विश्वास करने पर भी प्रश्न उठाया है।

21. उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि पुर्तगाल के मामले में स्पेन और इटली से उसकी निकटता का यह अर्थ नहीं है कि वही कीमतें पुर्तगाल में भी प्रचलित हैं, जो स्पेन और इटली में प्रचलित हैं। हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि यूरोपीय संघ के महज एक सीमाशुल्क संघ होने का यह अर्थ नहीं है कि इसके सभी सदस्य देशों में मजदूरी की दर, विद्युत टैरिफ और अन्य तत्वों की लागत एक समान है और इसलिए उत्पादन लागत समान है। अतः भिन्न-भिन्न उत्पादकों की कीमतों में निश्चित रूप से अंतर होता है।

22. अपने प्रकटन के बाद के अनुरोधों में हितबद्ध पक्षकारों ने टेकनॉन आंकड़ों को स्वीकार करने संबंधी अपने दृष्टिकोण को पुनः दोहराया है और यह भी बताया है कि उन्हें इनकी प्रति उपलब्ध नहीं कराई गई है यद्यपि उन आंकड़ों की सीमाओं और कमियों पर टिप्पणी करने के लिए ये प्रकाशित सार्वजनिक दस्तावेज होते हैं ।

23. जापान से निर्यातकों ने अपनी सार्वजनिक सुनवाई के बाद के अनुरोध में प्राधिकारी से उनके प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर उनके लिए सामान्य मूल्य तय करने का आग्रह किया है । उन्होंने डीजीसीआईएण्डएस द्वारा यथा संकलित एवं आवेदकों द्वारा प्रस्तुत मासिक आयात आंकड़ों में आंकड़ों की अनियमितता का मुद्दा भी उठाया है ।

24. तथापि, हितबद्ध पक्षकारों ने अंतर्राष्ट्रीय प्रथाओं के आधार पर निर्णायक समीक्षा जाँच के मानकों और कार्यक्षेत्र के बारे में याचिकाकर्ताओं द्वारा दिए गए तर्कों के विरुद्ध कुछ नहीं बताया है ।

च.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

25. प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा याचिकाकर्ताओं द्वारा यथा प्रस्तुत गौण स्रोतों से सूचना के उपयोग के विरुद्ध तर्क देते समय इन देशों में घरेलू कीमतों के बारे में कोई उपयोगी सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है । सार्वजनिक सुनवाई के दौरान भी हितबद्ध पक्षकारों से इस संबंध में प्राधिकारी को विश्वसनीय सूचना उपलब्ध कराने के लिए कहा गया था । टेकनॉन समाचार पत्र जो सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध होते हैं; हितबद्ध पक्षकारों को उसी उत्पाद के संबंध में आसानी से उपलब्ध है । तथापि, आवेदकों द्वारा यथा प्रस्तुत समाचार पत्रों की प्रतियों को सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल में भी रखा गया था । अतः प्राधिकारी इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों को न्यायसंगत नहीं समझते हैं ।

26. जापान के प्रतिवादी निर्यातकों ने प्राधिकारी के साथ पूर्ण रूप से सहयोग नहीं किया है और सत्यापन हेतु अपने को प्रस्तुत नहीं किया । उनसे सहयोग के अभाव में उनके आंकड़ों पर विश्वास नहीं किया जा सका और प्राधिकारी को उपलब्ध तथ्यों पर विश्वास करना पड़ा था । उपर्युक्त उपलब्ध तथ्यों के मद्देनजर जापान के लिए पाटन मार्जिन के निर्धारण की पद्धति करार के अनुच्छेद 6.8 के अनुसार थी । जहाँ तक आयात आंकड़ों पर उनके तर्कों का संबंध है यह नोट किया जाता है कि इस मामले में सभी निर्धारणों के लिए डीजीसीआईएण्डएस के समन्वित सौदेवार वार्षिक आयात आंकड़ों पर भरोसा किया गया है ।

27. प्राधिकारी ने विभिन्न प्राधिकारियों द्वारा उनकी निर्णायक समीक्षाओं में अपनायी गई पद्धतियों और प्रथाओं तथा इस विषय पर संगत डब्ल्यू टी ओ न्याय व्यवस्थाओं के संबंध में आवेदकों द्वारा दिए गए तर्कों को नोट किया है और इस मामले में पाटन के जारी रहने और इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के मुद्दे की जाँच की है ।

च. 4. पाटन का जारी रहना : सामान्य मूल्य; निर्यात कीमत एवं पाटन मार्जिन का निर्धारण

28. इस बात के निर्धारण कि क्या पाटन उस अवधि के दौरान विशेष रूप से जाँच अवधि के दौरान, जारी रहा जबकि शुल्क लागू था, के पहले कदम के रूप में प्राधिकारी ने निर्यात के अलग-अलग देशों के लिए सामान्य मूल्य; निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन को निर्धारित किया था ।

29 प्राधिकारी नोट करते हैं कि स्पेन, पुर्तगाल और इटली के किसी भी निर्यातक ने कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है और प्राधिकारी द्वारा इन देशों में संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के निर्धारण करने की दृष्टि से जाँच में कोई सहयोग नहीं दिया है । जापान के निर्यातकों ने अपने शुरुआती आंशिक सहयोग के पश्चात बाद की पूछताछों का उत्तर नहीं दिया है और सत्यापन अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया है । अतः प्राधिकारी इस जाँच के प्रयोजनार्थ उनके आंकड़ों की उपेक्षा करने के लिए बाध्य है और करार के अनुच्छेद 6.8 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 7(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण करते हैं ।

च.4.1. सामान्य मूल्य

30. संबद्ध देशों से किसी निर्यातक से कोई सहयोग न मिलने के कारण प्राधिकारी ने निर्यातक देशों में सामान्य मूल्य के निर्धारण और/या सामान्य मूल्य की गणना में उपलब्ध तथ्यों की पद्धति को अपनाया है ।

पाटनरोधी करार के अनुबंध II के पैरा 7 में यह प्रावधान है कि :

यदि प्राधिकारी को सामान्य मूल्य समेत अन्य बातों के संबंध में अपने जाँच परिणामों के लिए जाँच शुरुआत के लिए आवेदन में दी गई सूचना समेत गौण स्रोतों से प्राप्त सूचना को आधार मानना हो तो उन्हें ऐसा विशेष सावधानी बरतते हुए करना चाहिए । ऐसे मामले में प्राधिकारी को, जहाँ व्यवहार्य हो, अपने पास उपलब्ध अन्य स्वतंत्र स्रोतों जैसे प्रकाशित कीमत सूचियों; आधिकारिक आयात आंकड़ों और सीमाशुल्क विवरणों से प्राप्त सूचनाओं और जाँच के दौरान अन्य हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त सूचना की जाँच करनी चाहिए । तथापि यह स्पष्ट है कि यदि कोई हितबद्ध पक्षकार सहयोग नहीं करता है और इस प्रकार संगत सूचना को प्राधिकारी को नहीं बताया गया हो, तो इस स्थिति में ऐसा परिणाम निर्धारित हो सकता है जो उस निष्कर्ष से कम अनुकूल हो जो पक्षकार द्वारा सहयोग करने की स्थिति में निकलता ।”

31. आवेदकों ने जाँच अवधि में संगत अवधि के लिए टेकनॉन आर्बिकेम, जो फाइबर्स एण्ड इण्टरमीडिएट कंसल्टिंग सेवाओं के क्षेत्र का समाचार पत्र है और लंदन से प्रकाशित होता है; की प्रतियाँ प्रस्तुत की हैं । इस समाचार पत्र में विभिन्न बाजारों में कीमत रुझानों के साथ उपर्युक्त उत्पादों के व्यापार के तिमाही आंकड़े प्रकाशित किए जाते हैं । यद्यपि हितबद्ध पक्षकारों ने इन आंकड़ों के प्रयोग पर आपत्ति जताई है तथापि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्राधिकारी के समक्ष कोई अन्य संगत सूचना प्रस्तुत करके इन समाचार पत्रों में प्रकाशित कीमत रुझानों का खण्डन नहीं किया है । निर्यातक देशों के घरेलू बाजार में किसी किन्हीं अन्य विश्वसनीय आंकड़ों के अभाव में संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बाजार कीमतों के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इन प्रकाशित आंकड़ों पर विश्वास किया गया है ।

32. हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन के बाद के अनुरोधों में सामान्य मूल्यों, निर्यात कीमतों पर प्राधिकारी द्वारा स्वीकृत समायोजनों के निर्धारण की पद्धति पर प्रश्न उठाया है और अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिए हैं कि :

- i. यदि टेकनॉन की कीमतें आरंभिक बिन्दु है तो देश में कीमतों का निर्धारण मजदूरी दरों, विद्युत टैरिफ दरों, ब्याज दरों आदि में अंतरों और जापान के मामले में कम अंतरों को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए ।
- ii. मूलता के देश में फाइबर की मिल के द्वार पर कीमत की गणना के लिए टेकनान में दी गई बाजार दरों से उत्पाद शुल्क, व्यापार मार्जिन, परिवहन, अन्य करों आदि की राशियों को घटाना होगा ।
- iii. सामान्य मूल्य से निर्यात कीमत की तुलना के प्रयोजनार्थ सीआईएफ कीमत से अंतर्देशीय भाड़े और प्रहस्तन प्रभाओं को नहीं घटाया जाना चाहिए ।

33. हितबद्ध पक्षकारों के इन तर्कों की सावधानीपूर्वक जाँच की गई है । तथापि इनमें से किसी पक्षकार ने उनके द्वारा प्रस्तावित समायोजनों संबंधी कीमतों एवं सूचना पर कोई उपयोगी जानकारी नहीं दी है । संबद्ध देशों के निर्यातकों समेत हितबद्ध पक्षकारों से विश्वसनीय सूचना की अनुपस्थिति में प्राधिकारी ने इन देशों में सामान्य मूल्य के निर्धारण और संभव सीमा तक निर्यात कीमतों के समायोजन के लिए उपलब्ध तथ्यों संबंधी पद्धति अपनायी है ।

34. तथापि हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क कि टेकनान के प्रकाशित आंकड़ों में शायद बाजार में वस्तु की थोक कीमत प्रदर्शित होती हो और न कि वस्तु के कारखाना द्वार कीमत, पर विचार करने की आवश्यकता है । यह मानते हुए कि बताई गई कीमतें थोक बिक्री स्तर पर है और इन सौदों में इन 3% कमीशन एवं 2% का अतिरिक्त बिक्री व्यय और सामान्य खर्चों का वहन किया गया है, निर्यातक देशों में कारखाना द्वार पर सामान्य मूल्य की गणना के लिए इन कीमतों में व्यापार की स्थिति एवं व्यापार स्तर संबंधी समायोजन किए गए हैं । तदनुसार निम्न निर्धारण किए गए हैं ।

सामान्य मूल्य : स्पेन, पुर्तगाल और इटली :

35. इस मामले में यूरोपीय देशों (स्पेन, पुर्तगाल और इटली) में घरेलू बाजार कीमतों के प्रयोजनार्थ इस समाचार पत्र में यथा प्रकाशित पश्चिमी यूरोपीय बाजारों में एक्रिलिक फाइबर की तिमाही कीमतों को स्वीकार किया गया है । अलग-अलग देशों में कीमतों के ब्यौरे की अनुपस्थिति में इस समाचार पत्र में प्रकाशित कीमतें इन देशों में घरेलू बाजार कीमत को प्रदर्शित करने की दृष्टि से सर्वोत्तम प्रतीत होती है । इसके अलावा, यह नोट किया जाता है कि चूँकि शामिल देश एक ही सीमाशुल्क संघ के अंग हैं इसलिए इन बाजारों में कीमतें कम्पेक्ष समान होंगी । प्रकाशित आंकड़ों के ब्यौरे निम्नानुसार हैं :

कीमत अमरीकी डालर/प्रति टन

उत्पाद विवरण	जुलाई, 02		अक्तूबर, 02		जनवरी, 03		मार्च, 03		औसत	
	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न
एक्रिलिक फाइबर टो अनडाइड	1610	1559	1678	1658	1846	1793	1858	1825	1748	1708.75

वर्ष के लिए औसत कीमत 1728.38

स्पेन, पुर्तगाल और इटली

बिक्री कीमत (उच्च)	: 1748 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.74 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
बिक्री कीमत (निम्न)	: 1708 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.70 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
औसत बिक्री कीमत	: 1728 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.728 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
समायोजन	: 86.4 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 0.864 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
सामान्य मूल्य	: 1641.6 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.641 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.

सामान्य मूल्य : जापान

36. मै0 जापान एक्सलान ने जापान में अपनी घरेलू बाजार बिक्री कीमतों का ब्यौरा प्रस्तुत किया था, लेकिन इसके बाद प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया था और इन आंकड़ों का सत्यापन नहीं हो पाया था। उनके उत्पादन लागत के सत्यापन के अभाव में जापान में उत्पादकों का निर्यातक के आंकड़ों के आधार पर व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में निर्धारण नहीं किया जा सका था। यह भी नोट किया जाता है कि इस निर्यातक की अधिकांश घरेलू बिक्रियां उनकी सम्बद्ध पक्षकार अर्थात् उनके अपने यार्न व्यवसाय को की गई है। अतः उनके सम्बद्ध पक्षकारों के सौदों के पूर्ण सत्यापन के अभाव में आंकड़ों को स्वीकार नहीं किया जा सका है। मै0 मास्बैनी कार्पो. नामक अन्य निर्यातक भारत को निर्यात में शामिल एकमात्र व्यापारी है और इसलिए उनके मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण विनिर्माता के सहयोग पर आधारित था। आवेदकों ने ओसाका स्थित भारतीय मिशन से प्राप्त ई-मेल की एक प्रति संलग्न की है जिसमें जेट्रो, ओसाका से संग्रहित आंकड़ों के आधार पर जापान में एक्रिलिक फाईबर की घरेलू कीमत संबंधी सूचना दी गई है। भारतीय मिशन की रिपोर्ट में इंगित आंकड़ें निम्नानुसार हैं :

कीमतें मार्च, 2002 : जापानी येन 350 प्रतिकिग्रा = 2.7 अम0 डा0

लगभग 130 येन = 1 अमरीकी डालर की दर पर

जून, 2002 : जापानी येन 350 प्रति किग्रा0 = 2.7 अम0 डा0

ये कीमतें खुदरा स्तर पर या कुछ उच्च अंतिम उपयोग वाले उत्पादों की प्रतीत होती हैं जिनसे इन्हें स्वीकार करने का ठोस आधार नहीं बनता है।

37. जापान में घरेलू बिक्री कीमत के संबंध में किसी अन्य विश्वसनीय आंकड़े की अनुपस्थिति में टेकनॉन में प्रकाशित सूचना पर विश्वास किया गया है। लेकिन उक्त प्रकाशन द्वारा अपने एशियाई कीमतों संबंधी खण्ड में जापान में कीमतों को इंगित नहीं किया गया है। तथापि चीन में कीमतें केवल तीन डेन फाइबर्स के लिए उपलब्ध हैं। किसी अन्य युक्तिसंगत सूचना के अभाव में चीन में प्रचलित कीमतों की जाँच, जापान के लिए सामान्य मूल्य की गणना के लिए जापान में घरेलू कीमतों संबंधी निकटतम संभावित सूचना के रूप में की गई है और ये निम्नानुसार हैं :

कीमतें डालर/प्रति टन

उत्पाद विवरण	जुलाई, 02		अक्तूबर, 02		जनवरी, 03		मार्च, 03		औसत	
	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न	उच्च	निम्न
एक्रिलिक फाइबर टो अनडाइड	1630	1580	1750	1730	1590	1510	1750	1740	1680	1640

वर्ष के लिए औसत कीमत- 1660.00

38. इन समेकों की अप्रैल, 2003 के दौरान चीन को जापान के निर्यात की कीमतों से तुलना की गई जिसका उन्हीं दस्तावेजों में उल्लेख है जो कि 1.72 अमरीकी डालर प्रति कि.ग्रा. की औसत कीमत भी दर्शाते हैं। इसलिए, प्राधिकारी यह पाते हैं कि उपर्युक्त अनुमान अधिक उपयुक्त हैं तथा तदनुसार जापान में सामान्य मूल्य निम्नानुसार परिकल्पित किया गया है :

बिक्री कीमत (उच्च)	: 1680 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.68 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
बिक्री कीमत (निम्न)	: 1640 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.64 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
औसत बिक्री कीमत	: 1660 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.66 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
समायोजन	: 83 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 0.83 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.
सामान्य मूल्य	: 1577 अमरीकी डालर प्रति टन अर्थात् 1.577 अम.डा. प्रति कि.ग्रा.

च.4.2. निर्यात कीमतें

39. संबद्ध देशों से वास्तविक निर्यात आंकड़ों की अनुपस्थिति में डीजीसीआईएंडएस द्वारा संकलित सौदेवार आयात आंकड़ों की असंबद्ध उत्पादों के आंकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो छांटकर जांच की गई है। अंतर्देशीय तथा समुद्रीय भाड़े, हैंडलिंग प्रभारों, बीमा, कमीशन इत्यादि में आवश्यक समायोजनों को डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों के अनुसार सीआईएफ आयात कीमत पर लागू किया गया है ताकि सन तथा फाइबर दोनों के लिए निर्यात के देश में भारित औसत कार्य पश्चात निर्यात कीमत पर निम्नानुसार आकलन किया जाए :

च.4.3. समायोजनस्पेन, पुर्तगाल तथा इटली

40. यूरोपीय देशों से निर्यातों के मामले में समुद्रीय भाड़े, बीमा, कमीशन तथा पत्तन हैंडलिंग में समायोजनों को भारत में सहयोगी आयातकों में से एक मै0 राजस्थान स्पिनिंग मिल्स द्वारा प्रश्नावली के अपने उत्तर में तथा अंतर्देशीय परिवहन प्रभारों को उपलब्ध तथ्यों के आधार पर उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार परिकलित किया गया है। तदनुसार, इन देशों से निर्यातों के लिए अनुमत समायोजन निम्नानुसार है :-

- (क) निवल सीआईएफ कीमत अमरीकी डालर/कि.ग्रा. = *****
 (ख) निवल एफओबी कीमत अमरीकी डालर/कि.ग्रा. = *****
 (ग) समुद्री भाड़े, बीमा तथा हैंडलिंग में समायोजन = क - ख = 0.047
 (घ) अंतर्देशीय परिवहन तथा हैंडलिंग में समायोजन = 0.004
 (ङ.) कुल समायोजन = सी + डी = 0.051 अम0डा0/किग्रा0

जापान

41. जहां तक जापान से होने वाले निर्यातों का संबंध है, जापान से होने वाले निर्यातों की निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए, एक सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रश्नावली के उत्तर में उपलब्ध कराए गए समुद्री भाड़े, कमीशन, हैंडलिंग, बीमा, के साथ-साथ अंतर्देशीय परिवहन प्रभार संबंधी वास्तविक समायोजन का उपयोग किया गया है।

- (क) समुद्री भाड़ा, कमीशन, बीमा इत्यादि : *** अम0डा0/किग्रा0
 (ख) अंतर्देशीय परिवहन प्रभार : *** अम0डा0/किग्रा0
 कुल समायोजन : 0.1358 अम0डा0/किग्रा0
 (क) निवल निर्यात कीमत: स्पेन

42. डीजीसीआई एंड एस के आयात आंकड़ों के अनुसार टो एवं फाइबर के संबंध में स्पेन से होने वाले आयातों की मात्रा एवं सीआईएफ मूल्य निम्नानुसार है:

मद	मात्रा कि.ग्रा. में	मूल्य रु० में	निर्धारित दर रु./किग्रा.	निर्धारित दर अम०डा०/ किग्रा०	सीआईएफ दर अम०डा०/ किग्रा०	समायोजन	निवल निर्यात कीमत
टो		4669834		1.273		0.051	1.21
	754047	7	61.93		1.26		
फाइबर	33760	1799166	53.29	1.095	1.08	0.051	1.03
भारित औसत निवल निर्यात कीमत = 120 अम०डा० प्रति किग्रा.							1.202

विनिमय दर: रुपए 48.64 = 1.0 अम०डा०

(ख) निवल निर्यात कीमत: पुर्तगाल

43. डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों के अनुसार पुर्तगाल से टो एवं फाइबर का कोई आयात नहीं किया गया है। अतः पुर्तगाल से पाटन का जारी रहना कोई मुद्दा नहीं है।

(ग) निवल निर्यात कीमत: इटली

44. डीजीसीआई एंड एस के आयात आंकड़ों के अनुसार टो एवं फाइबर के संबंध में इटली से होने वाले आयातों की मात्रा एवं सीआईएफ मूल्य निम्नानुसार हैं :-

मद	मात्रा कि.ग्रा. में	मूल्य रु० में	निर्धारित दर रु./किग्रा.	निर्धारित दर अम०डा०/ किग्रा०	सीआईएफ दर अम०डा०/ किग्रा०	समायोजन	निवल निर्यात कीमत
टो	316348	18016988	56.95	1.17	1.16	0.051	1.11
फाइबर	1743601	112509834	64.32	1.32	1.31	0.051	1.26
भारित औसत निवल निर्यात कीमत = 1.233 अम०डा० प्रति किग्रा०							1.233

विनिमय दर: 48.64 रुपए = 1.0 अम०डा०

(घ) निवल निर्यात कीमत: जापान

45. डीजीसीआई एंड एस के आयात आंकड़ों के अनुसार टो एवं फाइबर के संबंध में जापान से

होने वाले आयातों की मात्रा निम्नानुसार है :-

मद	मात्रा कि.ग्रा. में	मूल्य रु० में	निर्धारित दर रु./किग्रा.	निर्धारित दर अम०डा०/ किग्रा०	सीआईएफ दर अम०डा०/ किग्रा०	समायोजन	निवल निर्यात कीमत
फाइबर	1326227	83511555	62.97	1.294	1.282	0.1358	1.1459
टो	188760	11922129	63.16	1.298	1.285	0.1358	1.1498
भारित औसत निवल निर्यात कीमत: 1.1464 अम०डा० प्रति किग्रा०							1.1464

विनिमय दर: 48.64 रूपए = 1.0 अम०डा०

46. जापान के निर्यातक द्वारा प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर के आधार पर जापान की निवल निर्यात कीमत *** अम०डा०/किग्रा. निकलती है, जो डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों के आधार पर निकाली गई निर्यात कीमत के निकट है। तथापि निर्यातक द्वारा किए गए कुछेक सौदे भारत में उनके संबद्ध आयातक के लिए होते हैं। तथापि डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों के आधार पर निकाली गई निवल निर्यात कीमत अधिक उचित मानी गई है।

च.4.4 पाटन मार्जिन

47. जांच अवधि के लिए उत्पाद प्रकारों के लिए औसत सामान्य मूल्य की तुलना औसत पाटन मार्जिन के निर्धारण के उद्देश्य से उपर निर्धारित भारत औसत निर्यात कीमत के साथ की गई है। तदनुसार परिकलित पाटन मार्जिन निम्नानुसार है:-

देश	औसत सामान्य मूल्य अम०डा०/किग्रा.	औसत निवल निर्यात कीमत अम०डा०/किग्रा०	पाटन मार्जिन अम०डा०/किग्रा०	निर्यात कीमत के % के रूप में पाटन मार्जिन
स्पेन	1.641	1.202	0.439	36.5%
इटली	1.641	1.233	0.408	33.09%
जापान	1.577	1.146	0.431	37.60%
पुर्तगाल	जांच अवधि के दौरान कोई निर्यात नहीं			

48. इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिनों को महत्वपूर्ण एवं न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है।

49. जांच अवधि के दौरान पुर्तगाल से कोई निर्यात न होने के कारण पुर्तगाल के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया जा सका।

च.5 पाटन की पुनरावृत्ति की संभावना

पिछले खंड में विश्लेषण से पता चलता है कि पाटनरोधी शुल्क के लागू रहने के बावजूद भी स्पेन, इटली एवं जापान से पाटित कीमतों पर आयात जारी है। तथापि, कीमतों पर निकासी शुल्क

के संभावित प्रभाव का परीक्षण करने के लिए प्राधिकारी ने पहले से लागू शुल्क की पृष्ठभूमि में संबद्ध देशों से आयातों की वर्तमान कीमत का विश्लेषण किया है। इन देशों से आयातों के वर्तमान पहुँच मूल्य को प्राधिकारी द्वारा मूल जांच में निर्धारित संदर्भ कीमत से काफी कम पाया गया है, जैसा कि नीचे दी गई सारणी में देखा जा सकता है।

लागू शुल्क (संदर्भ कीमत के आधार पर)	अंतिम जांच परिणाम के अनुसार	सीगेट के अनुसार अम0डा0	औसत 2002-203	पहुँच मूल्य अम0डा0	
जापान	असाही केमिकल्स	81.36	2.28	80.88	1.663
	ट्योबो	77.09	2.23		
	मिन्सुबिशी	79.57	2.16		
	सभी अन्य	81.36	2.28		
इटली	सभी निर्यातक	61.12	2.30	68.34	1.405
स्पेन	सभी निर्यातक	82	2.08	74.32	1.528
पुर्तगाल	सभी निर्यातक	74.22	2.28	शून्य	शून्य

51. उपर्युक्त सारणी में दर्शाया गया है कि सभी देशों से निर्यातों के पहुँच मूल्यों का निर्धारित संदर्भ कीमत से कम रहना जारी है। आगे पाटन की संभावना का विश्लेषण शामिल देशों में उपलब्ध अतिरिक्त क्षमता के संदर्भ में किया जाना है। इस संबंध में, किसी अन्य आंकड़े/सूचना के अभाव में टेक्नोन ऑर्बिकेम: सेवेन्थ एशिया फाइबर मार्केट्स (शंघाई 17-18 जून, 2004) की क्रॉफ़ेंस रिपोर्ट पर विश्वास किया गया है।

52. उपर्युक्त रिपोर्ट से प्रदर्शित होता है कि यद्यपि समूचे विश्व में क्षमता एवं उत्पादन के मध्य काफी अन्तर है, फिर भी जहां पश्चिमी यूरोप तथा जापान में उत्पादन में गिरावट आई है वहीं पूर्वी एशिया में उत्पादन में काफी उछाल आया है। अतः संबद्ध देशों में क्षमताओं के यौक्तिकीकरण से यह संकेत मिलता है कि इन देशों के पास मामूली लागत आधार पर भारत में पाटन जारी रखने हेतु पर्याप्त अतिरिक्त क्षमता नहीं है। जहां तक जापान का संबंध है, दो प्रमुख उत्पादकों नामत, असाही तथा कनेबो ने उत्पादन बंद कर दिया है। तथापि, लगभग 55000 मी0 टन के तिमाही निर्यात के साथ जापान, चीन को एक्रिलिक फाइबरों का एक प्रमुख निर्यातक रहा है।

53. रिपोर्ट में यह भी संकेत मिलता है कि दो एक्रिलिक फाइबर संयंत्र अर्थात् मोन्टेफाइबर का ओटाना संयंत्र तथा फिसिस्ये का बार्सीलोना संयंत्र हाल ही में बंद कर दिए गए हैं। जहां तक स्पेन का संबंध है, इस देश के एकमात्र बड़े उत्पादक ने उत्पादन बंद कर दिया है अतः यद्यपि जांच अवधि के आंकड़ों में पाटन प्रदर्शित हो रहा है फिर भी उस देश से पाटन की पुनरावृत्ति की संभावना नहीं है।

54. पुर्तगाल के प्रमुख उत्पादक एवं निर्यातक, मै0 फिसिस्ये बार्सीलोना एस0ए0 ने प्राधिकारी को सूचित किया है कि उन्होंने भारतीय बाजार को छोड़ने का फैसला किया है और इसलिए कार्यवाही में भाग लेने के इच्छुक नहीं है। घरेलू उद्योग ने प्रकटन के पश्चात के अपने विवरण में इस बात की पुष्टि की है कि फिसिस्ये के स्पेन स्थित संयंत्र के बंद होने के पश्चात यह कम्पनी अपने पुर्तगाल स्थित संयंत्र से घरेलू बाजार के लिए उत्पादन कर रही है और इसलिए उसके पास निर्यात हेतु पर्याप्त अतिरिक्त क्षमता नहीं है। अतः भविष्य में पुर्तगाल से पाटन की संभावना के कोई आसार नहीं है।

55. अपने प्रकटन के पश्चात के निवेदनों में आवेदक घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि यद्यपि वे प्राधिकारी के इस मत से असहमत नहीं है कि यूरोप में कई संयंत्रों के बंद होने के कारण, स्पेन, पुर्तगाल एवं इटली से पाटन के जारी रहने का खतरा न के बराबर है, परंतु वे प्राधिकारी की इस बात से असहमत हैं कि विश्व भर में उत्पादन एवं क्षमता के बीच भारी अंतर है। उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि स्पेन, पुर्तगाल और इटली से पाटन जारी रहने की संभावना नगण्य है। दूसरी ओर उन्होंने अनुरोध किया है कि समूचे विश्व बाजार को यूरोप से होने वाले निर्यातों में आई समग्र गिरावट के कारण यूरोप से पाटन के जारी रहने की संभावना के संबंध में यद्यपि वे चिंतित नहीं हैं, तथापि उन्होंने तर्क दिया है कि जापान से निर्यातों की मात्रा अत्यधिक वृहद है तथा जापान से पाटन के जारी रहने की प्रबल संभावना है।

56. प्राधिकारी ने वर्ष 2001, 2002 तथा 2003 के लिए विश्व व्यापार एटलस आंकड़ों पर विश्वास किया है। समूचे विश्व को वर्ष 2001, 2002 तथा 2003 में संबद्ध देशों से हुए निर्यात को दर्शाने वाले इन आंकड़ों में निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है:-

देश	2001	2002 विश्व निर्यात	2003
स्पेन	7419	8793	6380
इटली	7059	6937	4645
जापान	314530	321213	270622

उपर्युक्त आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि वैश्विक बाजार को स्पेन एवं इटली से हुए कुल निर्यात अत्यंत मामूली हैं। तथापि, दो इकाइयों के बंद हो जाने के बावजूद भी विश्व बाजार में जापान की निर्यात मात्रा वृहद है। विभिन्न रिपोर्टों से भी यह संकेत मिले है कि लगभग 55000 मी0 टन के तिमाही निर्यात के साथ जापान, चीन को एक्रिलिक फाइबर का एक प्रमुख निर्यातक रहा है। तथापि चीन की मांग में संतृप्ति की स्थिति आ जाने से जापान उत्पादकों के लिए मांग में ठहराव की संभावना बन सकती है और अतिरिक्त क्षमता को भारत में पाटन हेतु उपयोग में लाया जा सकता है। तथापि, याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया है कि जापान से पाटन के जारी रहने और/अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की प्रबल संभावना है।

57. संबद्ध देशों से पाटन के जारी रहने की संभावना के संबंध में याचिकाकर्ताओं एवं अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए विभिन्न तर्कों तथा इन देशों से होने वाले निर्यात की मात्रा एवं क्षमता के यौक्तिकीकरण का परीक्षण किया गया है। प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किए गए तर्कों के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में स्पेन, पुर्तगाल और इटली से निर्यातों की मात्रा से यह प्रदर्शित होता है कि इन देशों के पास पाटन करने हेतु पर्याप्त क्षमता नहीं है, अतः निकट भविष्य में भारतीय उद्योग को उनसे कोई खतरा नहीं है। तथापि, 50% की कुल निर्यात मात्रा के साथ जापान की अतिरिक्त क्षमता तथा विश्व बाजार, चीन को किए जाने वाले निर्यातों की मात्रा वृहद है। विभिन्न रिपोर्टों से यह संकेत मिले हैं कि पिछले कुछ वर्षों में चीन ने पर्याप्त क्षमता विकसित कर ली है तथा चीन में घरेलू क्षमता के विकास के साथ जापान से भारत में पाटन की संभावना अत्यधिक बढ़ गई है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी का यह विचार है कि यद्यपि जांच अवधि के दौरान स्पेन, इटली एवं जापान से पाटन जारी रहा है, तथापि शुल्क हटा लिए जाने की स्थिति में स्पेन, पुर्तगाल एवं इटली से पाटन के जारी रहने अथवा उसमें तेजी आने की कोई संभावना नहीं। तथापि, जहां तक जापान का संबंध है, उसके मामले में ऐसा प्रतीत नहीं होता।

छ. क्षति निर्धारण

58. पाटन निर्धारण के समान, निर्णायक समीक्षा हेतु किए जाने वाले क्षति विश्लेषण में इस बात का परीक्षण करना आवश्यक होता है कि यदि निश्चयात्मक शुल्क समाप्त अथवा हटा लिए जाते हैं तो क्या घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

छ.1 क्षति का संचयी आकलन

59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह निर्णायक समीक्षा पहले से लागू उपायों के बारे में है और इसमें पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-॥ (iii) के अनुसार संबद्ध देशों से लगातार पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संचयी आकलन के मुद्दे की जांच की गई है और उन्होंने यह माना है कि उपर्युक्त नियमों में विनिर्दिष्ट शर्तें इस मामले में संचयी आकलन हेतु पूरी होती हैं।

छ.2 क्षति का जारी रहना

छ.1.1 घरेलू उद्योग के विचार

60. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि विभिन्न स्रोतों से पाटित आयातों के जारी रहने से, पाटनरोधी शुल्क संबंधी संरक्षण के उपलब्ध होने के बावजूद घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति जारी है। उन्होंने अन्य बातों के साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं कि:-

- उन्हें विभिन्न देशों से पाटन के कारण क्षति हुई है, इनमें वे देश भी शामिल हैं जिनमें या तो जांच चल रही है, अथवा पाटनरोधी शुल्क लागू किए जा चुके हैं।
- घरेलू उद्योग एक लम्बे समय से एक के बाद एक विभिन्न स्रोतों से, पाटन का सामना कर रहा है। तथापि, क्षति एवं क्षति की मौजूदगी दर्शाने वाले आर्थिक मानदण्डों को वर्तमान शुल्कों तथा चल रही जांचों के आलोक में देखा जाना आवश्यक है।
- विभिन्न देशों से (संबद्ध देशों सहित) संबद्ध वस्तु के आयातों में, पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद समग्र अर्थों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

- पहले से लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद भारत में उत्पाद की मांग की तुलना में, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है।
- घरेलू उद्योग के उत्पादन की तुलना में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है।
- यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में मामूली वृद्धि हुई है, परन्तु इसका कारण उत्पादन की लागत में वृद्धि होना है। घरेलू उद्योग ने दीर्घकालिक पाटन के कारण लम्बे समय तक नुकसान उठाने के बाद पाटनरोधी शुल्क संरक्षण के कारण वसूली शुरू की है।
- संबद्ध देशों से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से काफी कम है, जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी कटौती हुई है।
- संबद्ध देशों से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से काफी कम है, जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी कटौती हुई है।
- घरेलू उद्योग ने महत्वपूर्ण बिक्री मात्रा एवं बाजार हिस्सा गंवाया है।
- घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा उसकी उत्पादन लागत से कम है।
- यद्यपि घाटों में कमी हुई है, परन्तु इसे पाटनरोधी संरक्षण तथा विगत में हुए बड़े घाटों के आलोक में देखा जाना चाहिए। यद्यपि नकद प्रवाह में सुधार आया है फिर भी घरेलू उद्योग को होने वाले वित्तीय घाटे जारी हैं।
- पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को अपने रोजगार स्तर में कटौती करने पर मजबूर होना पड़ा है।
- उत्पादन में वृद्धि तथा रोजगार स्तर में कटौती के कारण उत्पादकता में सुधार हुआ है।
- बाजार में वृद्धि होने के बावजूद, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक रही है।
- सभी मापदण्डों से संचयी रूप से इस बात की पुष्टि होती है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है और यदि इस चरण पर शुल्क समाप्त कर दिया जाएगा तो उद्योग को होने वाली क्षति में वृद्धि हो जाएगी।

61. प्रकटन के बाद आवेदकों ने यह तर्क दिया है कि कुछेक मापदण्डों में सुधार अनेक स्रोतों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण हुआ है। उन्होंने आगे यह तर्क दिया है कि यदि शुल्क हटा दिया जाएगा तो घरेलू उद्योग को पुनः क्षति पहुँचेगी। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ निर्यातक और/अथवा आयातक देश में एजेंटों को विदेशी उत्पादकों द्वारा संदत्त कमीशन के लिए पहुँच मूल्य में से छूट प्रदान की जानी चाहिए।

62. आवेदकों ने यह भी तर्क दिया है कि पाटनरोधी शुल्क के अधीन आने वाले स्रोतों से हुए आयातों की जांच यह देखने के लिए की जानी चाहिए कि क्या ये आयात वास्तव में पाटनरोधी शुल्क अदा किए गए आयात हैं अथवा शुल्क छूट योजनाओं के अंतर्गत किए गए आयात हैं। चूँकि ये आयात अधिकांशतः विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत शुल्क मुक्त आयात होते हैं इसलिए कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हेतु पाटनरोधी शुल्क के बिना इन आयातों का पहुँच मूल्य प्रासंगिक है।

छ.2 निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

63. द इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन और लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन तथा जापान के निर्यातकों ने अपने-अपने अनुरोधों में यह तर्क दिए हैं:-

- जहां तक आयातों का संबंध है घरेलू उद्योग ने एक्रिलिक फाइबर और टो को आमेलित कर दिया है और केवल एक्रिलिक फाइबर की घरेलू बिक्री के आंकड़े ही लिए हैं।
- यह कि यद्यपि लघु अवधि में क्षमता के स्थिर रहने का दावा किया गया है तथापि उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई है और इस समय वह क्षमता से अधिक कार्य कर रहा है अतः क्षति का कोई चिन्ह नहीं है।
- यह कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एक्रिलिक फाइबर की प्रतिस्पर्धा भारत में उत्पादित अथवा विनिर्मित अन्य फाइबरों के साथ है जिन्हें माँग के पैटर्न, कीमत के कोण आदि में परिवर्तन के आधार पर उपभोक्ता उद्योग द्वारा वरीयता दी जा सकती है। दूसरे शब्दों में किसी भी फाइबर चाहे वह पॉलिस्टर या विस्कस या एक्रिलिक या कॉटन या कोई अन्य फाइबर हो, के लिए कोई आरक्षित बाजार नहीं है। अतः घरेलू उद्योग को भारत में अन्य उत्पादकों या विनिर्माताओं के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी।
- यह कि निर्यात पूर्ववर्ती वर्षों में 320 टन प्रति वर्ष के स्तर से अचानक बढ़ कर 2002-2003 में 5176 टन हो गया है। पिछले वर्षों में उत्तरोत्तर वृद्धि के बावजूद भारत में उत्पादित अन्य फाइबरों के साथ प्रतिस्पर्धा तथा निर्यातों ने 2002-2003 में बिक्रियों पर प्रभाव डाला है। अतः आयातों के कारण क्षति का निश्चय ही कोई चिन्ह नहीं है।
- यह कि यद्यपि भारतीय पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (आईपीसीएल) और कंसॉलिडेटेड फाइबर्स एंड केमिकल्स अपने उत्पादन को बढ़ा पाए और वर्धमान अपने उत्पादन को बनाए रख सका तथापि दो इकाइयों नामतः इंडियन एक्रिलिक्स और पशुपति एक्रिलॉन ने उत्पादन में भारी गिरावट की सूचना दी है।
- यह कि इंडियन एक्रिलिक और पशुपति एक्रिलॉन की उत्पादन लागत समीक्षाधीन वर्ष के लिए बहुत अधिक होगी क्योंकि उनके द्वारा अपनी क्षमता का उचित रूप से उपयोग नहीं किया जा रहा है जिससे उद्योग की औसत उत्पादन लागत में वृद्धि होती है। इस प्रकार, उद्योग का औसत विकृत हो गया है और औसत बिक्री कीमत, उत्पादन लागत, लाभ/हानि में प्रवृत्ति का अध्ययन भी विकृत हो गया है।
- यह कि जब तीन इकाइयों ने बेहतर निष्पादन किया और दो इकाइयाँ अच्छा नहीं कर सकीं तब इसका अर्थ यह है कि समस्या आयातों के कारण नहीं बल्कि उक्त दोनों इकाइयों की अपनी कठिनाइयों के कारण है।
- यह कि घरेलू उद्योग द्वारा दी गई गणनाएँ गलत हैं क्योंकि आयातों में फाइबर तथा टो शामिल हैं जबकि देशी उत्पादन मात्र फाइबर का है।
- कुछ इकाइयों, जिनके द्वारा स्वयं की अक्षमताओं के कारण उत्पादन में गिरावट की सूचना दी गई है, की उच्चतर लागतों के कारण घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमतें उच्चतर हैं।
- यह कि घरेलू उद्योग द्वारा 65.87 रूपए प्रति किग्रा. की दर से एक्रिलिक फाइबर का निर्यात किया जा रहा है।
- यह कि कीमत अवमूल्यन/ह्रास तथा कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री के संबंध में सभी विवरण पूरी तरह से गलत हैं क्योंकि आयात कीमतें टो और फाइबर के लिए हैं जबकि भारतीय कीमतें मात्र फाइबर के लिए हैं।
- लगाई गई पूँजी पर आय की अनुमानित दर बहुत उच्च है और इसलिए उसे लाभ एवं हानि के आँकड़ों के आधार पर परिकलित किया जाना चाहिए न कि किसी मानदंड के आधार पर।
- यह कि घरेलू उद्योग को यह समझना चाहिए कि पाटनरोधी शुल्क बाजार विकृतियों को सही करने का उपकरण है न कि घरेलू उद्योग की अक्षमताओं के बचाव का।

- यह कि आयातों के मामले में एक्रिलिक फाइबर और टो के शामिल होने और घरेलू उद्योग द्वारा देशी उत्पादन के मामले में केवल एक्रिलिक फाइबर पर विचार करने के कारण सभी तुलनाएँ विकृत एवं मिथ्या हैं और निष्कर्ष भ्रामक एवं गलत हैं;
- यह कि इटली, स्पेन एवं जापान के लिए सामान्य कीमत के निर्धारण के लिए आँकड़े स्पष्ट रूप से गलत और अविश्वसनीय हैं तथा उनका प्रयोग टैरिफ जांच पड़ताल के लिए नहीं किया जा सकता है।
- यह कि पुर्तगाल से कोई आयात नहीं हुआ है और संभावित आयातों की आशंका का कोई आधार नहीं है और यह एक तुच्छ आशंका है।
- यह कि क्षमता और उत्पादन के मानदंडों से कोई क्षति प्रदर्शित नहीं होती है;
- जैसा कि पहले कहा गया है, बिक्री पर प्रभाव डालने वाले कारकों का मूल्यांकन करने के लिए बिक्री के मानदंडों पर उचित रूप से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। यदि प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कर ली जाती है तो यह नोट किया जाएगा कि बिक्री में कमी का कारण आयात नहीं है;
- यह कि बाजार हिस्से, कीमत कटौती, कीमत अवमूल्यन/हास के मानदंड आयातों के मामलों में टो तथा फाइबर के सम्मिलित होने तथा घरेलू उद्योग के मामले में मात्र फाइबर पर विचार किए जाने से प्रभावित हैं।

64. संक्षेप में, हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने अपने निष्पादन में सुधार किया है और इस समय उसे कोई क्षति नहीं हो रही है और क्षति, यदि कोई हो तो वह उनकी अक्षमताओं के कारण है और इसलिए उसे इन स्रोतों से होने वाले आयातों पर नहीं थोपा जा सकता है।

65. इसके अतिरिक्त हितबद्ध पक्षकारों ने अपने प्रकटन पश्चात् निवेदनों में अपने तर्कों को दुहराया है और निवेदन किया है कि घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा की गई निर्यात बिक्रियों को घरेलू उद्योग के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह पुष्टि की है कि शुल्क मुक्त आयात स्कीमों के तहत आयात किए जा रहे हैं। उन्होंने आगे तर्क दिया है कि कीमत कटौती विश्लेषण के प्रयोजनार्थ परिवहन लागत को जोड़ने के बाद उपभोक्ता द्वार पर आयात कीमत परिकलित की जानी चाहिए। उन्होंने इस आधार पर कि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत उनके गैर-आर्थिक आकार तथा अन्य प्रबंधन अकुशलताओं के कारण उच्च है, कीमत अवमूल्यन तथा हास विश्लेषण पर भी प्रश्न उठाए हैं। उन्होंने घरेलू उद्योग को क्षति के विभिन्न मानदंडों के संबंध में अपने तर्क दुहराए हैं।

छ.3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

66. प्राधिकारी ने विभिन्न पक्षकारों द्वारा अपने निवेदनों में दिए गए विभिन्न तर्कों पर विचार किया है और घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने के मुद्दे की जाँच प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किए गए विभिन्न तर्कों के आलोक में की गई है। जाँचों की संख्या तथा विभिन्न देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के विरुद्ध लागू पाटनरोधी शुल्क के मुद्दे की भी जाँच की गई है।

67. यह नोट किया गया है कि सभी पूर्ववर्ती जाँचों में एक्रिलिक फाइबर और टो को समान उत्पाद माना गया है और दोनों उत्पादों की संयुक्त मात्रा तथा मूल्यों के आधार पर एकल पाटन मार्जिन तथा क्षति विश्लेषण को उचित पाया गया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा माँग के आधार पर भिन्न-भिन्न अनुपातों में टो तथा फाइबर का उत्पादन किया जाता है और जाँच प्रक्रिया के दौरान दोनों उत्पादों के संबंध में उनकी बिक्री प्राप्ति का सत्यापन किया गया है। अतः घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत और बिक्री प्राप्ति अन्य पक्षकारों के हित के विरुद्ध क्षति विश्लेषण और पाटन मार्जिन तुलना को विकृत नहीं करते हैं। "समान वस्तु" के निर्धारण के अंतर्गत इस मुद्दे पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। अतः हितबद्ध पक्षकारों द्वारा टो एवं फाइबर के संयुक्त विश्लेषण के विरुद्ध दिए गए तर्कों को तर्कसंगत नहीं पाया गया है।

68. पाटनरोधी अधिनियम की धारा 3.1 तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 में पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के अनुवर्ती प्रभाव, दोनों की वस्तुपरक जाँच का प्रावधान है। प्राधिकारी द्वारा यह जाँच किया जाना अपेक्षित है कि क्या सापेक्ष अथवा उत्पादन के साथ तुलनात्मक रूप में आयातों में या आयातक सदस्य के उपभोग में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा यह जाँच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा कि क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अत्यधिक गिरावट आएगी या कीमतों में वृद्धि में रूकावट आएगी जो कि अन्यथा काफी बढ़ गई होती।

69. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने क्षति की उपस्थिति तथा पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जाँच के लिए घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रात्मक एवं कीमत प्रभाव और कीमतों तथा लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जाँच की है।

70. चूँकि स्पेन, इटली एवं जापान से निर्यातों के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन स्थापित किया गया है अतः उन देशों से होने वाले समग्र निर्यातों को क्षति विश्लेषण एवं कारणात्मक संबंधों के प्रयोजनार्थ पाटित आयातों के रूप में माना जाएगा।

(क) मात्रात्मक प्रभाव:

पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव एवं घरेलू उद्योग पर प्रभाव

71. संबद्ध देशों के साथ-साथ अन्य देश, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है, से पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव की निम्नानुसार जाँच की गई है:-

(i) आयात मात्रा एवं संबद्ध देशों का हिस्सा

मात्रा मी0 टन में

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
कुल आयात (फाइबर + टो)	14258	13967	9669	21093

संबद्ध देशों से आयात	4835	5092	3909	5743
पाटनरोधी शुल्क सहित अन्य	8436	7472	4709	12023
पाटनरोधी शुल्क सहित कुल आयात	13271	12564	8618	17766
पाटनरोधी शुल्क के बिना अन्य	986	1403	1051	3326
संबद्ध देशों का %	34 %	36 %	40 %	27 %
पाटनरोधी शुल्क सहित आयात का %	93 %	90 %	89 %	84 %
पाटनरोधी शुल्क के बिना आयात का %	7 %	10 %	1.1 %	16 %

स्रोत: डीजीसीआई एंड एस आँकड़े

72. चूँकि टो एवं फाइबर को समान उत्पाद माना गया है अतः सभी विश्लेषण टो एवं फाइबर की कुल मात्रा के लिए किए गए हैं। यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों के विरुद्ध लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के बावजूद उन देशों से पाटन की मात्रा उच्च बनी रही है हालाँकि आयातों की कुल मात्रा में उसके हिस्से के रूप में पिछले वर्ष अर्थात् 2001-2002 में वृद्धि प्रदर्शित करने के बाद आधार वर्ष में 34% से जाँच अवधि के दौरान 27% तक गिरावट आई है। यह भी प्रतीत होता है कि संबद्ध देशों से आयातों के हिस्से में 7% तथा वे सभी स्रोत जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है, से आयातों के हिस्से में 9% की कमी को उन अन्य स्रोतों से होने वाले आयातों ने ले लिया है जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है।

(ii) माँग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा

73. यह नोट किया जा सकता है कि टो तथा फाइबर का उत्पादन एक ही उत्पादन लाइन में किया जाता है और उत्पादन का मिश्रण दोनों उत्पादों की माँग पर आधारित होता है। अतः टो एवं फाइबर के संयुक्त उत्पादन के लिए परिकल्पित की गई कुल क्षमता एवं सभी अन्य मानदंड निम्नानुसार है :-

घरेलू उद्योग की क्षमता	मी. टन	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
		89500	89500	89500	89500
अन्य	मी. टन	24000	24000	24000	24000

उत्पादकों की क्षमता **					
कुल क्षमता	मी. टन	113500	113500	113500	113500
घरेलू उद्योग का उत्पादन	मी. टन	81592	77461	81754	82742
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	94.94	100.20	101.41
अन्य का उत्पादन	मी. टन	12607	21219	12231	20812
देश में कुल उत्पादन	मी. टन	94199	98680	93985	103554

* घरेलू उद्योग में मै0 इंडियन एक्रिलिक्स, मै0 कंसोलिडेटेड फाइबर, मै0 पशुपति एक्रिलॉन तथा मै0 वर्धमान एक्रिलिक शामिल हैं।

** अन्य में मै0 आईपीसीएल शामिल हैं।

		1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग	%	91.16%	86.55%	91.34%	92.45%
अन्य सहित समग्र घरेलू क्षमता उपयोग	%	82.99%	86.94%	82.81%	91.24%

74. घरेलू उद्योग का औसत क्षमता उपयोग 90% से ऊपर रहा है हालाँकि कुछ इकाइयाँ अपनी निर्धारित क्षमता से अधिक निष्पादन कर रही हैं। अन्य उत्पादकों के उत्पादन को शामिल करते हुए उद्योग की समग्र क्षमता में आधार वर्ष में 83% से जाँच अवधि के दौरान 91% तक निश्चयात्मक सुधार हुआ है।

(iii) घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री

75. आवेदनकर्ताओं को घरेलू बिक्री में आधार वर्ष की तुलना में प्रत्यक्ष गिरावट प्रदर्शित हुई है। तथापि, यद्यपि अन्य उत्पादकों द्वारा बिक्री में मामूली वृद्धि हुई है, समग्र रूप में उद्योग की कुल बिक्रियों में गिरावट प्रदर्शित होती है और उनका स्थान आयातों ने ले लिया है।

		1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी. टन	83000	75233	86053	76530
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	90.64	103.68	92.21
अन्य उत्पादकों द्वारा बिक्री	मी. टन	16346	15084	17866	18981
कुल घरेलू बिक्री	मी. टन	99346	90317	103919	95511
घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात बिक्री	मी. टन	428	135	425	2170
कुल आयात (फाइबर + टो)	मी. टन	14258	13967	9669	21093

(iv) माँग एवं बाजार हिस्से

76. माँग तथा विभिन्न खण्डों के सदृश हिस्सों का विश्लेषण नीचे दी गई तालिका में किया गया है। विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि उत्पाद की माँग में वृद्धि आधार वर्ष एवं पिछले वर्ष की तुलना में बहुत अधिक नहीं थी। तथापि, माँग में मामूली वृद्धि को संबद्ध देशों से पाटित आयातों सहित विभिन्न स्रोतों से होने वाले आयातों द्वारा पूरा कर दिया गया है। शुल्क के लागू होने के बावजूद संबद्ध देशों से कुल आयातों में मामूली वृद्धि हुई है। कुल माँग के प्रतिशत के रूप में आयातों में आधार वर्ष की तुलना में 5.5% और पिछले वर्ष की तुलना में 7% वृद्धि हुई है और कुल माँग के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयातों में आधार वर्ष की तुलना में 1% से कम तथा पिछले वर्ष की तुलना में 1.5% की मामूली वृद्धि हुई है। अतः संबद्ध देशों से पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर बहुत मामूली मात्रात्मक प्रभाव प्रतीत होता है। तथापि, इसे संबद्ध देशों के विरुद्ध पहले से लागू पाटनरोधी शुल्क की पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए।

77. तथापि, आँकड़ों से यह संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन के अनुपात में उसकी बिक्री कम हो कर 92.5% हो गई है जिससे अपने उत्पाद को बाजार में बेचने में घरेलू उद्योग की अक्षमता का संकेत मिलता है।

कुल घरेलू माँग (बिक्री + आयात)	मी. टन	113604	104284	113588	116604
आयात का बाजार हिस्सा					
कुल माँग के % के रूप में कुल आयात	%	12.55%	13.39%	8.51%	18.09%
कुल माँग के % के रूप में संबद्ध देशों से आयात	%	4.26%	4.88%	3.44%	4.93%

कुल माँग के % के रूप में अन्य देशों से आयात	%	8.29%	8.51%	5.07%	13.16%
घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा					
कुल माँग के % के रूप में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा	%	73.06%	72.14%	75.76%	65.63%
कुल माँग के % के रूप में अन्य उत्पादकों का बाजार हिस्सा	%	14.39%	14.46%	15.73%	16.28%
उत्पादन के % के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री	%	101.73%	97.12%	105.26%	92.49%

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

78. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़े प्रभाव की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास, कीमत अवमूल्यन, यदि कोई हो, के संदर्भ में जाँच की गई है।

79. इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ उत्पादन की भारित औसत लागत, भारित औसत निवल बिक्री वसूली (एनएसआर) और घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारक कीमत (एनआईपी) (घरेलू उद्योग और समर्थक उत्पादक की लागत सूचना को मानकीकृत करने के पश्चात् परिकलित) की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच लागत के साथ की गई है।

(i) कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव

80. कीमत कटौती का निर्धारण सकल जाँच अवधि में जाँचाधीन प्रत्येक देश से पाटित आयातों के भारित औसत पहुँच मूल्य की उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री वसूली के साथ तुलना कर के किया गया है। उसी प्रयोजन के लिए सीआईएफ से सैद्धांतिक कमीशन समायोजित करने के लिए घरेलू उद्योग के दावे और घरेलू उद्योग के एनएसआर के साथ तुलना के लिए उपभोक्ता द्वार पर कीमत की गणना करने हेतु पहुँच मूल्य में अंतर्देशीय भाड़ा शामिल करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्क कम कीमत पर बिक्री और कीमत कटौती के उचित निर्धारण के लिए तर्क संगत नहीं पाए गए हैं।

81. आयातों का पहुँच मूल्य संबद्ध देशों से आयात कीमतों के डीजीसीआई एंड एस आँकड़ों में सूचित मूल्यांकन योग्य मूल्य में लागू मूल सीमाशुल्क जोड़ कर परिकलित किया गया है।

82. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का निर्धारण करने में छूट, बट्टा और घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत कमीशन तथा अदा किए गए केंद्रीय उत्पाद शुल्क के लिए छूट दी गई है।

83. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्रत्येक देश से आयातों के भारत औसत पहुँच मूल्य की तुलना जाँच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारक बिक्री कीमत तथा शेष वर्षों के उत्पादन की लागत के साथ की गई है।

रु./किग्रा०				
	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003 जाँच अवधि
निवल बिक्री प्राप्ति सूचीबद्ध	100	121	101	111
उत्पादन लागत क्षतिरहित कीमत	100	139	115	114
पहुँच मूल्य				*****
जापान	100	116	111	113
स्पेन	100	110	115	111
इटली	100	107	104	0.93
पुर्तगाल	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
पाटनरोधी शुल्क के बिना कीमत कटौती				
जापान				-0 से 5%
स्पेन				-0 से 5%
इटली				5 से 15 %
पुर्तगाल				
कम कीमत पर बिक्री				
जापान				5 से 15%
स्पेन				5 से 15%
इटली				15 से 25%
पुर्तगाल				

पहुँच मूल्य अन्य (जापान के पहुँच मूल्य के संदर्भ में सूचीबद्ध)

वेलारूस

87.32

जिन देशों पर शुल्क नहीं लगाया गया है उनका औसत पहुँच मूल्य

85.62

अन्य देश जिन पर शुल्क लगाया गया है उनका औसत पहुँच मूल्य

101.05

84. कीमत कटौती (लागू पाटनरोधी शुल्क पर विचार किए बिना) जापान तथा स्पेन के मामले में नकारात्मक तथा इटली के लिए सकारात्मक पायी गयी है। तथापि, कम कीमत पर बिक्री को सभी तीनों देशों के लिए सकारात्मक पाया गया है।

(ii) पाटित आयातों के कीमत न्यूनीकरण तथा मंदीकारक प्रभाव

कीमत न्यूनीकरण

85. पाटित आयातों के कीमत न्यूनीकरण प्रभावों की उत्पादन की लागत, निवल बिक्री वसूली तथा संबद्ध देशों से पहुँच मूल्य के संदर्भ में भी जांच की गयी है।

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
पाटित आयातों के उत्पादन की लागत	रुपए/मी.टन	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	139.32	115.10	114.27

पाटित आयातों की निवल बिक्री वसूली	रुपए/मी.टन	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	121.17	83.76	110.12

86. संबद्ध वस्तु के उत्पादन की लागत एक्रीलोनीट्राइल तथा अन्य जैसे कच्चे माल पर आधारित पेट्रोलियम की अत्यधिक उतार-चढ़ाव भरी कीमतों पर निर्भर करती है। जहां आधार वर्ष की तुलना में अनियमित वर्ष 2000-01 को छोड़कर जांच अवधि के दौरान उत्पादन की लागत लगभग 9.00 रुपए प्रति किग्रा. बढ़ी है। वहीं घरेलू उद्योग अपनी निवल बिक्री वसूली को 7.00 रुपए प्रति किलोग्राम बढ़ाने में समर्थ रहा है। इसलिए, यह प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों तथा अन्य स्रोतों से आयातों के कमतर पहुँच मूल्य के कारण उत्पादन की बढ़ी लागत को वसूल करने के लिए अपनी कीमतों को बढ़ाने से रोका गया है।

कीमत में कमी

87. यद्यपि जापान से आयातों के पहुँच मूल्य (देय पाटनरोधी शुल्क पर विचार किए बिना) घरेलू उद्योग के सी ओ पी तथा एन एस आर से अधिक है - तथापि स्पेन तथा इटली से आयातों से कमतर पहुँच मूल्य का घरेलू कीमतों पर कीमत न्यूनीकारक प्रभाव प्रतीत होता है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को अपने बाजार हिस्से को बनाए रखने के लिए अपनी कीमतों को कम करने के लिए बाध्य होना पड़ा है। इसी समय घरेलू उद्योग की कीमत प्रवृत्ति, अन्य स्रोतों से आयातों के पहुँच मूल्य के

संबंध में देखी जानी है। यह भी देखा गया है कि केवल निर्धारित शुल्क लागू स्रोतों से आयात तथा जांचाधीन स्रोतों (बेलारूस) से आयात का घरेलू उद्योग की कीमतों पर न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है तथा उद्योग अपनी कीमतें बढ़ाने में असमर्थ रहा है यद्यपि संबद्ध देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क में घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें लाभदायक स्तर तक बढ़ाने के लिए एक बेहतर मंच मिला है।

छ.4 क्षति संबंधी मानदण्डों की जांच

88. घरेलू उद्योग की मात्रा तथा कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के पश्चात ऐसे मानदण्डों का विश्लेषण किया गया जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति को इंगित कर सकें।

(i) उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

	1999-00	2000-01	2001-02	मात्रा मी.टन में 2002-03(जांच अवधि के दौरान)
पाटित आयातों की क्षमता	89500	89500	89500	89500
अन्यों की क्षमता	24000	24000	24000	24000
कुल घरेलू क्षमता	113500	113500	113500	113500
पाटित आयातों का उत्पादन	81592	77461	81754	82742
अन्यों का उत्पादन	12607	21219	12231	20812
कुल घरेलू उत्पादन	94199	98680	93985	103554
घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग	91.16 %	86.55 %	91.34 %	92.45 %
कुल घरेलू क्षमता उपयोग	82.99 %	86.94 %	82.81 %	91.24 %

89. क्षति जांच अवधि के दौरान क्षमता विस्तार नहीं हुआ है तथा घरेलू उद्योग का उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में मामूली सुधार प्रदर्शित हुआ है। तथापि, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग के रूप में निष्पादन को बिक्री के साथ भी देखा जाना है।

(ii) बिक्री में गिरावट

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
पाटित आयातों का उत्पादन	81592	77461	81754	82742
पाटित आयातों की	83000	75233	86053	76530

बिक्री				
पाटित आयातों द्वारा निर्यात	428	135	425	2170
पाटित आयातों की कुल बिक्रियां	83428	75268	86478	78700
कुल घरेलू बिक्री	99346	90317	103919	95511
उत्पादन के % के रूप में आवेदकों की संख्या	101.73 %	97.12 %	105.26%	92.49 %

90. घरेलू उद्योग की बिक्री (आवेदकों तथा साथ ही साथ सभी घरेलू उत्पादकों को एक साथ लेकर) में आधार वर्ष तथा साथ ही साथ पिछले वर्ष की तुलना में भारी कमी प्रदर्शित हुई है। यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग बाजार में उत्पादन को बाजार में उतारने में समर्थ नहीं रहा है तथा आयातों के कीमत प्रभावों के कारण इसी उत्पादन स्तर के विरुद्ध उद्योग की बिक्री में गिरावट हुई है। घरेलू उद्योग की कुल बिक्री में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट की प्रवृत्ति है। बिक्री में यह गिरावट उत्पादन की लागत में मामूली वृद्धि के साथ देखी गयी है तथा घरेलू उद्योग को अपनी बाटम लाइन को सुधारने के लिए अपने एन एस आर में वृद्धि करने का प्रयास यह इंगित करता है कि उद्योग द्वारा लाभदायक स्तर तक कीमत बढ़ाने को किसी प्रयास से मात्रात्मक रूप में घटा होगा क्योंकि प्रचलित पाटित कीमत स्तर के कारण उद्योग को अपने बाजार हिस्से को बनाए रखने के लिए समनुरूप होना पड़ा।

(iii) बाजार हिस्सा तथा उद्योग में वृद्धि

मात्रा मी. टन में

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
कुल घरेलू मांग (बिक्री + आयात)	113603	104284	113587	116603
पाटित आयातों की घरेलू बिक्री	83000	75233	86053	76530
कुल मांग में % के रूप में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा	73.06 %	72.14 %	75.76 %	65.63 %
कुल मांग में % के रूप में संबद्ध देशों से आयात	4.26 %	4.88 %	3.44 %	4.93 %
कुल मांग में % के रूप में अन्य	14.39 %	14.46 %	15.73 %	16.28 %

उत्पादकों का बाजार हिस्सा				
कुल मांग में % के रूप में अन्य देशों से आयातों का बाजार हिस्सा	8.29 %	8.51 %	5.07 %	13.16 %
	100	100	100	100

91. जैसा कि तालिका में प्रदर्शित है देश में उत्पाद की कुल मांग में मामूली वृद्धि दर्ज हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग की कुल बिक्री मात्रा में पिछले वर्षों की तुलना में ऋणात्मक वृद्धि हुई है। उत्पादन के % के रूप में बिक्री में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है जो भण्डार सूची की वृद्धि को प्रदर्शित करती है। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्सों में 7 प्रतिशत की भारी गिरावट हुई है। इसी समय संबद्ध देशों से मांग के प्रतिशत के रूप में आयात में पिछले वर्ष की तुलना में 1.5 प्रतिशत की वृद्धि तथा आधार वर्ष में 0.5 प्रतिशत की वृद्धि प्रदर्शित हुई है। अन्य घरेलू उत्पादकों ने एक बेहद मामूली बाजार हिस्सा प्राप्त किया है। घरेलू उद्योग द्वारा गंवाए गए बाजार के बड़े हिस्से पर अन्य स्रोतों से आयातों द्वारा कब्जा कर लिया गया प्रतीत होता है जबकि संबद्ध देशों से आयातों ने इस मांग के एक छोटे हिस्से को भी कब्जे में ले लिया है।

92. घरेलू उद्योग द्वारा कोई विस्तार अथवा क्षमता वृद्धि नहीं हुई है क्योंकि देश में मौजूद क्षमता का पूर्णतः उपयोग नहीं किया गया है तथा प्रचलित कीमतें अतिरिक्त क्षमता वृद्धि करने के लिए पर्याप्त लाभदायक प्रतीत नहीं होती हैं यह इस तथ्य के बावजूद है कि उत्पाद के लिए मांग में मामूली वृद्धि हुई है।

(iv) उत्पादकता

93. घरेलू उद्योग की उत्पादकता को उत्पादन की श्रम उत्पादकता के रूप में मापा गया है तथा यह नोटिस किया गया है कि उत्पादकता में सुधार हुआ है क्योंकि रोजगार स्तर में कमी तथा उत्पादन में मामूली वृद्धि हुई है। तथापि, बढ़ी हुई उत्पादकता आनुपातिक रूप से लाभप्रदता में परिलक्षित नहीं हुई है।

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
घरेलू उत्पादन	81592	77461	81754	82742
कर्मचारियों की संख्या	1875	1859	1780	1712
उत्पादकता (उत्पादन/कर्मचारी)	43.52	41.67	45.93	48.33
उत्पादकता प्रति दिन (मी. टन)	223.54	212.22	223.98	226.69

(iv) लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक तथा संभाव्य प्रभाव

94. यद्यपि समूचे रूप में घरेलू उद्योग को नकद प्रवाह में वृद्धि हुई है तथापि उद्योग को जांच अवधि के दौरान घाटा होता रहा है। उद्योग पाटित आयातों की प्रचलित कीमत के कारण अपनी लागत को वसूल करने हेतु उचित कीमत प्रदान करने में असमर्थ रहा है।

सूचीबद्ध

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
एन एस आर (पाटित आयात)	100.00	121.17	83.76	110.12
प्रति मी टन सी ओ पी (पाटित आयात)	100.00	139.32	115.10	114.27
प्रति मी.टन लाभ/हानि	100	-6453	-4825	-798
नकद घाटा/लाभ (लाख रूपए में)	100	-12500	-12311	-2767

(v) रोजगार तथा मजदूरी

95. रोजगार स्तर में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 8 प्रतिशत की गिरावट आई है। किन्तु वेतन तथा मजदूरी के कारण खर्चों में लगभग 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। तथापि, वेतन तथा मजदूरी में व्यय की वृद्धि तुलनीय अवधि के दौरान उत्पादन में (लगभग 14 प्रतिशत की) वृद्धि के आस-पास रही है।

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
कर्मचारी	संख्या	100	99	95	91
कर्मचारियों को प्रदत्त मजदूरी	लाख रूपए	100	110	112	115

(vi) निवेश पर आय तथा पूंजी जुटाने की क्षमता

96. घरेलू उद्योग द्वारा लगायी गयी पूंजी पर आय में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट प्रदर्शित हुई है। तथापि, पिछले 2 वर्षों की तुलना में लगाई गयी पूंजी पर आय में सुधार प्रदर्शित है जिससे यह पता चलता है कि उद्योग पुनर्लाभ की प्रक्रिया में है। तथापि, केवल एक घरेलू उत्पादक मै0 इंडियन एक्सीलिक लिमि0 के कारण आय की धनात्मक दर (प्राप्त हुई) है जिसने पिछले कई वर्षों में घाटा उठाने के पश्चात् जांच अवधि के दौरान लाभ प्रदर्शित किया है।

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
आर ओ सी ई - एन एफ ए	%	100	-9.41	-13.75	67.42

(vii) निवेश

97. आवेदकों द्वारा जांच अवधि के दौरान कोई क्षमता वृद्धि या कोई नया निवेश नहीं किया गया है।

(viii) पाटन की मात्रा

98. पाटन की मात्रा, जो कि इस बात का संकेतक है कि पाटित आयातों के कारण किस हद तक घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है से यह प्रदर्शित हुआ है कि नामित देशों के विरुद्ध निर्धारित पाटन मार्जिन, जांच अवधि के लिए, जबकि पाटनरोधी शुल्क लागू हैं, वास्तविक है।

(ix) कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

99. कीमत संरचना में, यदि कोई हो, परिवर्तन; घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा तथा प्रतिस्पर्धी प्रतिस्थापनों की कीमतों की पाटित आयातों से इतर कारकों, जो कि घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकते थे, का विश्लेषण करने के लिए जांच की गयी है। एकीकृत फाइबर उनका एक सस्ता विकल्प है तथा वस्त्रों, घरेलू तथा औद्योगिक क्षेत्रों में इसके कई अनुप्रयोग हैं, तथा अभी भी यह जारी है क्योंकि स्थानापन्न उत्पाद की कीमत अधिक है। इसलिए, उनके एक विकल्प के रूप में इसकी मांग में कीमतों को प्रभावित करने वाले कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुए हैं। मुख्य हिस्से के उत्पादक (कुल घरेलू उत्पादन तथा बिक्री का लगभग 70 प्रतिशत) इस जांच के एक पक्षकार हैं तथा अन्य उत्पादकों की कीमतें इसी कीमत बैंक के भीतर गति करती हैं। इसलिए घरेलू प्रतिस्पर्धा, घरेलू उद्योग की कीमतों को बहुत अधिक सीमा तक प्रभावित करती प्रतीत नहीं होती हैं।

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री कीमतें	रूपए/मी.टन			
आई पी सी एल	100	78.01	101.84	124.02
पाटित आयातों का एन एस आर	100.00	121.17	83.76	110.12

(x) भण्डार सूची

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	156.94	27.86	138.28
कुल बिक्री के % के रूप में भण्डार सूची	%	4.39 %	7.62 %	1.18 %	6.43 %

100. भण्डार सूची एक निरपेक्ष शब्द है तथा यह बिक्री के अनुपात के रूप में पर्याप्त भण्डार सूची निर्मित प्रदर्शित करता है जिससे घरेलू उद्योग की घरेलू बाजार में उत्पादों को उतारने की अयोग्यता इंगित होती है।

छ. 5 अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध

101. निर्यातक तथा अन्य हितबद्ध पक्षों ने जांच की अवधि के दौरान अपने लिखित अनुरोधों में बहुत से तर्क दिए हैं जिसमें आवश्यक रूप से यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने अपने कुल निष्पादन में सुधार किया है। उन्होंने आगे तर्क दिया है कि जबकि घरेलू उद्योग के घटकों में कुछ का निष्पादन अच्छा रहा है तथा वे लाभ कमा रहे हैं वहीं अन्य उनकी आंतरिक समस्याओं के चलते घाटा वहन कर रहे हैं जिसका इन स्रोतों से हुए पाटन से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने अपने लिखित अनुरोधों में सार्वजनिक सुनवाई के दौरान किए गए तर्कों के आधार पर निम्नलिखित 2 तर्क दिए हैं -

(क) तीन याचिकाकर्ता कंपनियों के वार्षिक लेखों/रिपोर्टों के अनुसार दो का समूचा निवल मूल्य घटा है तथा वे बी आई एफ आर प्राधिकारी को आवेदन करने ही वाले हैं। लागू विनिश्चयात्मक शुल्कों के बावजूद याचिकाकर्ता में से एक बीमार कंपनी बन गयी है तथा दूसरी अपने डिफाल्ट स्थिति को सक्षम प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए प्रतीक्षा में है। इसलिए, इससे कंपनियों के मामलों का अनुप्रयुक्त प्रबंधन इंगित होता है तथा याचिकाकर्ताओं को हुई क्षति का संबद्ध देशों से आयातों से कोई लेना-देना नहीं है।

(ख) जबकि इंडियन पेट्रोकेमिकल्स लि० (आई पी सी एल) तथा कंसोलिडेटेड फाइबर्स व केमिकल्स अपना उत्पादन बढ़ा सके तथा वर्धमान एंक्रीलिक इसे बरकरार रख सके, दो अन्य इकाइयां नामतः इंडियन एंक्रीलिक तथा पशुपति एंक्रीलोन ने अत्यधिक गिरावट की रिपोर्ट की। इसलिए इन दो इकाइयों के उत्पादन की लागत उद्योग के औसत को निष्प्रभावी करते हुए उच्चतर होगी। चूंकि कुछेक इकाइयों ने अच्छा निष्पादन नहीं किया है इसका तात्पर्य यह है कि क्षति का कारण उनकी अपनी कठिनाइयां हैं।

102. अन्य कारकों के विश्लेषण के एक भाग के रूप में अन्यो के साथ-साथ दोनों मुद्दों की जांच पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गयी क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण करने के लिए जांच की गयी। यह देखा गया है कि उठाया गया दूसरा मुद्दा तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है। जांच अवधि के दौरान आई पी सी एल की स्थिति में सुधार पिछले वर्ष के दौरान कम निष्पादन स्तर के कारण हुआ है। पशुपति एक्सीलोन का उत्पादन वास्तव में 100 प्रतिशत से अधिक क्षमता उपयोग के साथ बढ़ा है।

103. जहां तक पहले मुद्दे का संबंध है यह नोट किया जा सकता है कि घरेलू उद्योग की स्थिति को अन्य विभिन्न स्रोतों से पाटन, उत्पादन की लागत तथा ऐसी कीमत को शामिल करते हुए एक समूचे रूप में देखा जाना है जिसे निरंतर पाटन की स्थिति में वसूल किया जा सकता है।

घरेलू उद्योग में उत्पादन की लागत भी निविष्टियों की लागत के साथ संबद्ध हैं - जिनका मुख्यतः आयात होता है तथा इन पेट्रोलियम आधारित रासायनों की कीमतें अस्थिर रही हैं। उचित बिक्री मूल्य/क्षतिरहित कीमत के निर्धारण में उन कमियों पर ध्यान दिया गया है जो घरेलू उद्योग की लागत तथा कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए कमियों के कारण कथित स्व निर्देशित क्षति पाटन के कारण नहीं हुई है।

104. हितबद्ध पक्षों ने यह तर्क दिया है कि पाटनरोधी संरक्षण के बावजूद याचिकाकर्ता कंपनियाँ बीमार होने के कगार पर हैं तथापि, यह नोट किया जा सकता है कि बहुत से अन्य देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क निर्धारित शुल्क आधार पर लगाया गया है। इसलिए कीमतों को कम करने के जरिए शुल्क निवारण को पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता है। इस स्थिति में यह प्रतीत होता है कि वह कीमत जिस पर बाजार में वस्तुएं प्रवेश करती हैं ने घरेलू उद्योग को अपनी कीमत को वसूलने की अनुमति नहीं दी है तथा इसलिए क्षति की निरंतरता का कारण कंपनियों के भीतर व्याप्त कमियों को नहीं बताया जा सकता। यह भी नोट किया जाना चाहिए कि 100 प्रतिशत क्षमता से अधिक पर प्रचालन करने के बावजूद आवेदक कंपनियों में कुछेक को घाटा हुआ है जो लागत संरचना में अलोचशीलता तथा कीमतों पर पाटित आयातों के न्यूनीकारक प्रभाव को इंगित करता है।

105. हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच करने के पश्चात नियमावली में वर्णित कुछेक गैर-प्रभावी कारकों की भी जांच की गयी।

(i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा तथा कीमतें

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
कुल आयात (फाइबर + सन)	14258	13967	9669	21093
पाटनरोधी शुल्क लगाए जा रहे अन्य स्रोतों से आयात	8436	7472	4709	12023
पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाए जा रहे अन्य स्रोतों से आयात	986	1403	1051	3326
अन्य स्रोतों से कुल आयात	9422	8875	5760	15349

106 प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से पाटित आयात कुल आयातों का लगभग 27 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं तथा पाटनरोधी शुल्क लगाए गए सभी स्रोतों से आयात कुल आयातों का लगभग 84 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं जो कि आधार वर्ष से लगभग 9 प्रतिशत कम है। शुल्क लगाए जाने वाले स्रोतों से आयातों का पहुँच मूल्य (प्रयोज्य पाटनरोधी शुल्क को छोड़कर) शुल्क न लगाए जाने वाले स्रोतों से आयातों के पहुँच मूल्य से बहुत अधिक है। वस्तुतः शुल्क न लगाए जाने वाले देशों से आयातों को भारित औसत पहुँच मूल्य, घरेलू उद्योग के एन एस आर तथा सी ओ पी से बहुत कम है। यह भी नोट किया जाता है कि बेलारूस से संबद्ध वस्तुओं के कथित पाटन जो शुल्क न लगाए जाने वाले सभी स्रोतों से आयातों के 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनता है पर समानान्तर जांच चल रही है तथा इस देश से पहुँच मूल्य 66/-रुपए प्रति किग्रा० है।

107. तथापि उन देशों जिनके विरुद्ध शुल्क लागू है (जो कुल आयातों का लगभग 84 प्रतिशत बनता है), से सभी आयातों का पाटनरोधी प्रदत्त पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से अधिक है जिससे वर्तमान में नकारात्मक कीमत कटौती का संकेत मिलता है। लेकिन जांचाधीन देश अर्थात् बेलारूस और अन्य देशों से पृथक् रूप से आयात ऐसी कीमतों पर हुए हैं जो संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्य से काफी कम है। इन आयातों से एक साथ उन कीमतों पर दमनकारी प्रभाव पड़ा हुआ मालूम होता है जिनके कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतों को लाभकारी स्तरों तक नहीं बढ़ा पाया था। इसलिए अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमतों से संबद्ध देशों से आयातों की अपेक्षा घरेलू कीमतों पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हुआ मालूम होता है जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को वर्तमान में भारी क्षति हुई।

(iii) मांग में संकुचन और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

108. संबद्ध वस्तु की मांग में क्षति जांच अवधि के दौरान मामूली वृद्धि प्रदर्शित हुई है। तथापि इससे खपत की पद्धति में स्पष्ट परिवर्तन नहीं मिलता है जिससे देश में संबद्ध वस्तु की मांग पद्धति में वास्तविक रूप से परिवर्तन होने की संभावना है। मांग में मामूली वृद्धि मुख्यतः संबद्ध देशों के पाटित आयातों से इतर अन्य स्रोतों से आयातों के कारण हुई है।

(iv) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

109. संबद्ध वस्तुओं का मुक्त रूप से आयात किया जा सकता है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं नहीं हैं। याचिकाकर्ता देश में क्षमता का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा है। संबद्ध वस्तुओं के अन्य उत्पादक भी इसी कीमत सीमा के भीतर परिचालन करते हैं। यद्यपि अन्य विभिन्न स्रोतों से होने वाले आयातों के एक बड़े हिस्से पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है, इन स्रोतों से हुए आयातों का पाटनरोधी प्रदत्त पहुँच मूल्य एक बहुत ही संकुचित सीमा के भीतर है जिससे घरेलू उद्योग के लिए विभिन्न स्रोतों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा होने का संकेत मिलता है। ऐसा लगता है कि संबद्ध देशों सहित सभी स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमतों के रूप में पाए गए पाटन से संचयी रूप से घरेलू उद्योग को क्षति पहुँची है। इसलिए घरेलू उद्योग को हुई मौजूदा क्षति के लिए केवल संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

(v) प्रौद्योगिकी का विकास और निर्यात निष्पादन

110. समूचे विश्व में एक्रीलिक फाइबर का विनिर्माण या तो शुष्क प्रौद्योगिकी या आर्द्र प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके किया जाता है। इस उत्पाद का उत्पादन करने के लिए देश में 5 उत्पादकों में से दो उत्पादक शुष्क प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं और तीन उत्पादक आर्द्र प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं और उनकी प्रौद्योगिकी अद्यतन है। प्रौद्योगिकीय मानकों और प्रचालन लागत के लिहाज से कोई खास अंतर नहीं है। इसलिए प्रौद्योगिकी में अंतर ऐसा कारक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन प्रभावित होता हो।

111. विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों में आधार वर्ष से वास्तविक रूप से बढ़ोतरी हुई है। वास्तव में निर्यात केवल जांच अवधि के दौरान अधिक हैं। हितबद्ध पक्षकारों ने इस बात को उठाया है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा किए गए निर्यात कम कीमतों पर हुए हैं जिनके कारण उनको क्षति हो सकती है। लेकिन निर्यातों की मात्रा बहुत कम है और कीमत में अंतर भी घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति पहुँचाने के लिए अधिक महत्वपूर्ण नहीं है।

(vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

112. श्रमिक उत्पादन और दैनिक उत्पादन की दृष्टि से घरेलू उद्योग की उत्पादकता में काफी सुधार प्रदर्शित हुआ है। इसलिए उत्पादकता एक ऐसा कारक नहीं है जिसको घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता हो।

113. घरेलू उद्योग ने प्रकटीकरण के बाद किए गए अपने अनुरोधों में यह तर्क दिया है कि करार के अनुच्छेद 3.5 के अंतर्गत पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयात से हुई क्षति को अलग करना अपेक्षित होता है। चूंकि बेलारूस से हुए आयात पृथक् रूप से जांच के अधीन हैं, बेलारूस से होने वाले आयातों से पाटित कीमतों पर हुए आयात बनते हैं और इसलिए इनको अनुच्छेद 3.5 के अंतर्गत सम्मिलित किया जाना अपेक्षित नहीं है। प्राधिकारी ने मुद्दे की जांच की है और उनका यह मत है कि चूंकि अन्य देशों, विशेष रूप से बेलारूस से पाटित कीमतों पर आयात जांच के अधीन हैं इसलिए संबद्ध देशों से आयातों के कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री के प्रभावों से यह संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग को हुई मौजूदा क्षति, यदि कोई हो, संबद्ध देशों से इतर अन्य स्रोतों के संबंध में अधिक सुस्पष्ट है।

114. क्षति मानदंडों संबंधी उपर्युक्त विश्लेषण और गैर-आरोपण कारकों से यह संकेत मिलता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग के निष्पादन में अनेक मापदंडों में सुधार हुआ है फिर भी संबद्ध देशों सहित अनेक स्रोतों से हुए पाटित आयातों के कारण बिक्रियों की मात्रा में कमी और कीमत में ह्रास और कमी के रूप में घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। तथापि, संबद्ध देशों से हुए आयातों का पहुँच मूल्य तथा मात्रा से यह संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग को हुई मौजूदा क्षति मुख्यतः अन्य कई स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं का आयात जिन पर उसी समय पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा था अथवा जिन्हें बिना शुल्क

आयात किया गया है, के कारण हुई हैं। पहले ही उपलब्ध शुल्क संरक्षण के कारण संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों से वर्तमान में घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति का मामूली हिस्सा प्रतीत होता है।

छ: 6 घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत का निर्धारण

115. लागत प्रभाग द्वारा संबद्ध वस्तु के लिए क्षतिरहित कीमत का परिकलन घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कसयी गयी सूचना का विस्तृत विश्लेषण और संवीक्षा करने के पश्चात् किया गया है। प्राधिकारी द्वारा उद्योग के लिए भारित औसत क्षति रहित कीमत का निर्धारण ***** रूपए प्रति किग्रा० के रूप में किया गया है।

छ: 7 क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

116. प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत की क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए निर्यातों के पहुँच मूल्य के साथ तुलना की गयी है। संबद्ध देशों से निर्यातों के भारित औसत पहुँच मूल्य और क्षति मार्जिनों का निम्नानुसार परिकलन किया गया है:-

क्षति मार्जिन	स्पेन	पुर्तगाल	इटली	जापान
क्षति रहित कीमत	*****	*****	*****	*****
पहुँच मूल्य	*****	*****	*****	*****
क्षति मार्जिन	5 से 15 %	लागू नहीं	15 से 25 %	5 से 15 %

ज. क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

117. प्राधिकारी ने पहले यह निर्धारण किया था कि स्पेन, पुर्तगाल और इटली से पाटन के जारी रहने अथवा इसके पुनः होने की कोई संभावना नहीं है। तथापि जापान के मामले में पाटन के जारी रहने की संभावना की पूर्व के खण्ड में पुष्टि की गयी है। इसलिए क्षति के जारी रहने और/अथवा इसके पुनः होने की संभावना की इस खण्ड में उपर्युक्त टिप्पणियों के आधार पर जांच की गयी है।

118. संभावना की जांच के लिए स्पष्ट दिशानिर्देशों के बिना ए डी ए के अनुच्छेद 3.7 में विनिर्दिष्ट कारकों की क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना का निर्धारण किया गया है। तथापि, घरेलू उद्योग ने प्रकटीकरण के बाद किए गए अपने अनुरोधों में यह तर्क दिया है कि कसर के अनुच्छेद 3.7 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट मापदंड संभावना परीक्षण के लिए प्रासंगिक नहीं हैं और यह उपबंध क्षति के खतरे का विश्लेषण करने के लिए है जबकि सनसेट के अंतर्गत यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटनरोधी शुल्क को वापिस लेने से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के जारी रहने अथवा इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। अन्य देशों में अनुसरण की जाने वाली प्रथाओं के आधार पर उन्होंने घरेलू उद्योग की क्षति के जारी रहने या इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच करने के लिए अनेक मापदंडों का सुझाव दिया है। विश्व व्यापार एटलस के आंकड़ों का हवाला देते हुए आवेदकों ने अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि चूंकि पाटन की कोई संभावना नहीं है और इसलिए स्पेन, पुर्तगाल और इटली से हुए आयातों के

कारण परिणामी क्षति उन देशों से विश्व बाजार में प्रभावहीन निर्यातों के बावजूद, जापान अपनी विशाल क्षमता, विश्व बाजार में निर्यातों की मात्रा और उसके मुख्य निर्यातक बाजार अर्थात् चीन में मांग में संकुचन के कारण एक गंभीर खतरा है। उन्होंने आगे यह तर्क दिया है कि संबद्ध देशों से असहयोग तथा उनका भाग न लेना इस तथ्य के कारण है कि इस देश में उत्पादक पाटन और घरेलू उद्योग को हुई परिणामी क्षति के तथ्य से अच्छी तरह परिचित है। इसलिए समीक्षा में उनके भाग न लेने को इस बात का साक्ष्य समझा जाए कि यदि शुल्क को वापिस लिया जाता है तो गहन पाटन और घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है। उन्होंने आगे यह तर्क दिया है कि अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत भारी मात्रा में आयात हुए बताए गए हैं। इससे इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से विदेशी उत्पादक मुख्यतः सीमाशुल्क प्रदत्त आधार पर उत्पाद की बिक्री नहीं कर पाया। इसलिए यदि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क को वापिस लिया जाता है तो सीमाशुल्क प्रदत्त श्रेणी के अंतर्गत बड़े पैमाने पर आयातों का होना सन्निकट है।

119. प्राधिकारी ने उपलब्ध करायी गयी सूचना के आधार पर इन तर्कों की जांच की है और अनुच्छेद 3.7 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट मापदंडों की भी निम्नानुसार जांच की है:

(क) क्या घरेलू बाजार में पाटित आयातों में भारी वृद्धि हुई है जो अत्यधिक रूप से बढ़े हुए आयात की संभावना का सूचक है

मात्रा मी.टन में

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
संबद्ध देश	4835	5092	3909	5743
वृद्धि की दर		5.3 %	-23.24 %	46.97 %

120. यह देखा गया है कि वर्ष 2001-02 में नकारात्मक वृद्धि दर्शाने के पश्चात् संबद्ध देशों से पाटित आयातों में आधार वर्षों की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। तथापि, इन आयातों का बड़ा हिस्सा जापान से हुआ है। इन मात्राओं और वृद्धि की दर को पहले ही लागू शुल्क के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना है। जांच अवधि के दौरान सकारात्मक वृद्धि इस बात का संकेत है कि यदि शुल्कों को वापिस लिया जाता है तो आयात की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हो सकती है।

(ख) क्या अतिरिक्त निर्यातों को खपत करने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए निर्यातकों की क्षमता में पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य या सन्निकट वास्तविक वृद्धि हुई है जिससे आयातक सदस्य के बाजार में पाटित आयातों में अत्यधिक रूप से वृद्धि होने की संभावना का संकेत मिलता है:

121. पहले उद्धृत विभिन्न रिपोर्टों में यह दर्शाया गया है कि यूरोप और जापान संबद्ध वस्तुओं के दो मुख्य उत्पादक हैं जिनका विश्व के कुल उत्पादन में लगभग 45-50 प्रतिशत हिस्सा बनता है। पाटन की पुनरावृत्ति की संभावना की जांच में यह देखा गया था कि पिछले कुछ वर्षों में संबद्ध देशों की क्षमताओं में उल्लेखनीय रूप से यौक्तिकीकरण हुआ है और इन देशों में कई उत्पादन क्षमताएं बंद हो गयी हैं।

कंपनी	बंद करने का वर्ष	क्षमता
1. असाही, जापान	2003	65,000 मी.टन
2. मोन्टेफाइबर, इटली	2003	90,000 मी.टन
3. कनेको, जापान	2003	38,000 मी.टन
4. फिसिपी, स्पेन	2004	68,000 मी.टन
		2,61,00 मी.टन

स्रोत: 7वां एशिया फाइबर्स सम्मेलन, 17 जून, 2004

122. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि जापान में संयंत्रों के बंद होने का यह अर्थ नहीं है कि जापान के पास अतिरिक्त क्षमता नहीं है। उन्होंने यह निवेदन किया है कि जापान की घरेलू मांग उनकी कुल क्षमता की तुलना में काफी कम है और उसके पास लगभग 2,53,000 टन की विशाल अतिरिक्त क्षमता है। प्राधिकारी ने इन पहलुओं की ऊपर संदर्भित रिपोर्टों के आधार पर जांच की है। इन रिपोर्टों से यह संकेत मिलता है कि एक प्रमुख उत्पादक के बंद होने के बाद भी जापान के पास अतिरिक्त क्षमता है और इस क्षमता का उन निर्यातों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए उपयोग किया जाता है जिनका एक बड़ा हिस्सा चीन को निर्यात किया जाता है। चीन विचाराधीन उत्पाद का प्रमुख आयातक देश बना हुआ है और एक्रीलिक फाइबर की विश्व की कुल मांग में चीन का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा बनता है तथा अतिरिक्त निर्यातों, यदि कोई हो, को खपत करने के लिए इसकी मांग इसकी क्षमताओं से अधिक थी। इन रिपोर्टों से यह भी संकेत मिलता है कि चीन ने अपनी घरेलू मांग के अनुरूप ही अपनी क्षमता का निर्माण किया है जो इस बात का सूचक है कि जापान में जरूरत से ज्यादा क्षमता की समस्या हो सकती थी। इसलिए चूंकि भारतीय बाजार में पाटन जारी रखने के लिए यूरोपीय देशों में पर्याप्त अतिरिक्त क्षमता नहीं हो सकती है, इसलिए जापान से पाटन जारी रहने की प्रबल संभावना है। यह भी नोट किया जाता है कि जापान से मौजूदा कीमतें मूल जांच में नियत संदर्भ कीमत से काफी कम हैं और अधिकांश आयात शुल्क छूट स्कीमों के अंतर्गत किए जा रहे हैं। इसलिए एक बार शुल्क वापिस लेने से मौजूदा कीमत स्तर बने नहीं रह सकते हैं और शुल्क छूट स्कीम से बाहर भी आयात होने की संभावना है।

(ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर किए जा रहे हैं जिनका घरेलू कीमतों पर अत्यधिक दमनकारी प्रभाव है और जिनसे और अधिक आयातों के लिए मांग में वृद्धि होने की संभावना है:

123. कीमत ह्रास और मंदी विश्लेषण में यह संकेत दिया गया है कि मौजूदा कीमतें जिन पर संबद्ध देशों से भारतीय बाजार में माल आ रहा है उनका घरेलू कीमतों पर मामूली ह्रासकारी तथा दमनकारी प्रभाव है। यह भी संकेत दिया गया है कि अन्य स्रोतों से आयात कीमतों जिन पर इस समय शुल्क नहीं लग रहा है का पहले ही लागू पाटनरोधी शुल्क के कारण संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्य से इतर कीमतों पर न्यूनकारी प्रभाव मालूम होता है।

124. तथापि, इस मामले में कीमत ह्रास और मंदी से इस तथ्य के कारण शायद स्पष्ट संकेत नहीं मिले कि शुल्क पहले ही लागू हैं और आयात शुल्क छूट स्कीमों के अंतर्गत किए जा रहे हैं।

(घ) जांच किए जा रहे उत्पाद की माल सूचियां

125. चूंकि निर्यातक देशों के किसी भी निर्यातक ने जांच का उत्तर नहीं दिया है और उत्पाद की माल सूची संबंधी स्थिति सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है, इसलिए इस पहलु की जांच नहीं की जा सकती।

झ. निष्कर्ष

126. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों और उनके द्वारा किए गए निवेदनों और हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों अथवा अन्यथा के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों जैसा कि उपर्युक्त जांच परिणामों में रिकार्ड किया गया है, की जांच करने के पश्चात् और मौजूदा पाटन और क्षति तथा पाटन के जारी रहने या इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की स्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि

(i) स्पेन, इटली और जापान से आयात की गयी संबद्ध वस्तुओं के पाटन मार्जिन वास्तविक और न्यूनतम से अधिक है;

(ii) यदि शुल्क हटाए जाते हैं तो इटली, पुर्तगाल और स्पेन से पाटन के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है। तथापि, यदि शुल्क हटाए जाते हैं तो जापान से पाटन के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

(iii) यद्यपि घरेलू उद्योग इस समय मामूली वास्तविक क्षति उठा रहा है, तथापि मौजूदा क्षति का एकमात्र कारण अन्य स्रोतों से हो रहे ऐसे पाटित आयात हैं जिन पर वर्तमान में शुल्क नहीं लग रहा है;

(iv) यदि स्पेन, पुर्तगाल और इटली से होने वाले आयातों पर से शुल्क हटाए जाते हैं तो घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है। तथापि, यदि जापान से होने वाले आयातों पर से शुल्क हटाए जाते हैं तो घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है;

अ. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

127. सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति का पुनः बहाली हो सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देश से आयात किसी भी तरीके से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर असर नहीं पड़ेगा।

ट. सिफारिशें

128. इस निष्कर्ष पर पहुँचने के बाद कि स्पेन, पुर्तगाल और इटली से आयातों के कारण पाटन और क्षति के जारी रहने की कोई संभावना नहीं है, प्राधिकारी इन देशों के विरुद्ध शुल्क जारी रखने का कोई औचित्य नहीं पाते हैं और इसलिए इन देशों के विरुद्ध लागू शुल्क को हटाने की अनुशंसा करते हैं। तथापि, जापान से आयातों के कारण पाटन और क्षति की संभावना के सकारात्मक निर्धारण के मद्देनजर प्राधिकारी का यह मत है कि उस देश से आयातों के विरुद्ध शुल्क जारी रखना अपेक्षित है। तथापि उस देश से पाटन के मौजूदा स्तर और घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह मत है कि लागू उपाय को संशोधित किए जाने की जरूरत है। इसलिए प्राधिकारी इसको आवश्यक समझते हैं और जापान से संबद्ध देशों के आयातों पर नीचे उल्लिखित विधि एवं ढंग से पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा करते हैं।

129. प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए पाटन मार्जिन या क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। इस बात पर विचार करते हुए कि मूल जांच में शुल्क संदर्भ कीमत के आधार पर लगाया गया था, प्राधिकारी जापान के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर आयात के समय पहुँच मूल्य नीचे दी गयी तालिका के कॉलम 9 में दर्शाए गए मूल्य से कम होने की स्थिति में उक्त तालिका के कॉलम 9 में दर्शाए गए पहुँच मूल्य और संदर्भ कीमत के बीच के अंतर के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा करते हैं। इस प्रयोजनार्थ आयातों के इस पहुँच मूल्य का निर्धारण सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित वस्तु के मूल्य जमा लागू मूल सीमाशुल्क के रूप में किया जाएगा।

क्र.सं.	उप शीर्ष या टैरिफ मद	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भ कीमत	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	55033000 एवं 55013000	सिकुडने वाली और न सिकुडने वाली दोनों रूपों में टाऊ टाप और स्टेप्लज फाइबर को बर करने वाली एक्रिलिक फाइबर	1.5 डेनियर से 8 डेनियर तक की	जापान	कोई	कोई	कोई	1681	मी.टन	अमरीक डालर
2	55033000 एवं 55013000	सिकुडने वाली और न सिकुडने	1.5 डेनियर से 8 डेनियर तक की	कोई	जापान	कोई	कोई	1681	मी.टन	अमरीकी डालर

		वाली दोनों रूपों में टाऊ टाप और स्टेप्लज फाइबर्स को कवर करने वाली एक्रीलिक फाइबर								
--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

ठ. आगे की प्रक्रियाएं

130. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

131. प्राधिकारी अधिनियम के संगत प्रावधानों और समय-समय पर इस संबंध में जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार निश्चयात्मक शुल्क जैसा कि इसमें सिफारिश की गयी है को जारी रखने, उसको संशोधित करने और उसको समाप्त करने की आवश्यकता की समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। ऐसी समीक्षा के लिए कोई अनुरोध प्राधिकारी द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा यदि यह किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के भीतर दायर नहीं किया जाता है।

क्रिस्टी एल. फर्नांडिस, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 10th November, 2004

SUNSET REVIEW FINAL FINDINGS

Sub: Sunset Review of Anti-Dumping duty on imports of Acrylic Fibre originating in or exported from Italy, Spain, Portugal, and Japan

No. 15/4/2003-DGAD - WHEREAS, The Designated Authority (herein after also referred to as the Authority), having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as

amended in 1995 (herein after referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (herein after referred to as the Rules) investigated and recommended imposition of provisional Anti Dumping duty on imports of Acrylic Fibre (hereinafter referred to as subject goods) falling under Sub-heading 5501.30 and 5503.30 of ITC HS classification and originating in or exported from Japan, Spain, Portugal and Italy (hereinafter referred to as subject countries). The interim findings of the Authority were published vide Notification no. 32/1/97-ADD dated 20th October 1998 and provisional duty was imposed on the subject goods vide Customs notification No. 90/98 dated 17.11.1998. The Authority came out with its final findings on 24th December 1998 and definitive anti dumping duty was imposed by the Central Government vide notification No8/99 dated 22.01.1999 as amended by Notification No. 53/99-Cus. dated 04.05.1999.

2. **AND WHEREAS**, The Designated Authority, under Section 9A (5) of the Act and Rules made there under, received an application from the Forum for Acrylic Fibre Manufacturers, New Delhi on behalf of the following producers of Acrylic Fibre in India i.e., M/s Indian Acrylic Ltd., Chandigarh; M/s Consolidated Fibre and Chemicals Ltd, Calcutta; and M/s Pasupati Acrylon Ltd., New Delhi, for initiation of a sunset review investigation for continuation of the antidumping duty imposed on the subject goods under the above mentioned notifications for a further period of 5 years. One of the other Indian producers i.e. M/s Vardhaman Acrylics Ltd supported the application filed by the Forum for Acrylic Fibre Manufacturers. The Authority, on the basis of a request made on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 03.09.2003 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping sunset review investigation in respect of the duty in force against the subject countries as above, to determine whether the expiry of the duty would be likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

3. **AND WHEREAS** the antidumping duty as notified vide notification No8/99 dated 22.01.1999 as amended by Notification No. 53/99. Cus. dated 04.05.1999 was extended up to 16th Nov 2004 vide notification No. 158/2003 dated 22.10.2003 in terms of Section 9 (A) (5) of the said Act.

A BACK GROUND OF THE CASE

4. On the basis of an application filed by the above domestic producers in India alongwith M/s J.K. Synthetic Ltd, the Designated Authority conducted an investigation into Dumping, injury and Causal links of the imports from the above named countries and on the basis of its determination of dumping, injury and causal links notified its final findings on 24th December 1998. Acting Upon the findings of the Authority the Central Government imposed antidumping duty on imports of the

subject goods from the subject countries vide Customs notification No. 8/99 dated 22.01.1999. However, certain interested parties appealed against the findings of the Designated Authority and Notification of the Central Government before the CEGAT. While disposing off the petitions by several interested parties CEGAT modified the duty recommended by the Authority under para 55 of its final findings. The duty was converted into Dollar term. Acting upon the orders of the CEGAT, the Central Government amended the duties vide Notification No. 53/99. Cus. dated 04.05.1999.

B. PROCEDURE

5. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:
- i) The Authority sent questionnaires, alongwith the initiation notification, to the following known exporters/producers, in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information;
 1. M/s Ashahi Chemicals Industry Co. Ltd. Japan
 2. M/s Komatsuya Corporation, Japan
 3. M/s Fibras Simteticas De Portugal, Portugal
 4. M/s Courtaulds Europeans Fibre, Spain
 5. M/s Monte Fibre SPA, Italy
 - ii) The Embassies/High Commissions/ Representatives of the subject countries including the Delegation of the European Union in New Delhi were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers from their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. Copies of the letters, petitions and questionnaires sent to the exporters were also sent to the Embassies/High Commissions of subject countries alongwith a list of known exporters/ producers.
 - iii) Questionnaires were sent to known importers and consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4).

- iv) Investigation was carried out for the period starting from 1st April, 2002 to 31st March, 2003 (POI). However, injury examination was conducted for a period from 1999-00 to 2002-03.
- v) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and DGCIS to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations;
- vi) In response to the initiation communications were received from the following exporters through their legal representatives:
 - a) M/s Mitsubishi Rayon Co. Ltd Japan,
 - b) M/s Japan Exlan Co. Ltd, Japan,
 - c) M/s Marubeni Corporation, Japan,

The response of M/s Mitsubishi Rayon was incomplete in all respect and in spite of deficiency reminders the Company did not respond to complete the questionnaire. The other two exporters from Japan submitted their questionnaire responses but did not respond to the Authority's communication regarding the verification requirement of the data submitted by them vide letters dated 7th April 2004 and 22nd April 2004. Vide their letter dt. 30th April, 2004 the representative of the companies informed that due to major reshuffle in the acrylic fibre departments of their clients, they were unable to confirm any date for verification and that they have advised their clients that the investigation being time bound, the authority will make a decision on the basis of best information available under Rule 6.8 of the Anti Dumping Rules. Verification of cost of production is an essential component of anti dumping investigation for determination of normal value in the country of export in ordinary course of trade. Since the exporters involved did not cooperate for verification of their data, the questionnaire response submitted by them could not be relied upon and the above named exporters from Japan were treated as non-cooperative for the purpose of this investigation. These exporters also did not participate in the public hearing but the consultants for them filed two written submission after the public hearing based on the submissions made by others. The miscellaneous submissions made by these exporters have been considered to the extent they are relevant.

- d) M/s Fisispe Barcelona S.A., Portugal intimated that they have decided to leave the Indian Market and therefore, would prefer not to respond to the questionnaire.
- e) M/s Asahi Kasei Corporation, Japan intimated that they are not the exporters or producers of the subject goods any more and therefore, not interested to participate in the investigation.
- f) No other exporter from any of the countries named, have submitted any response, in any manner, to the initiation notification.

- vii) Following importers/ users of the subject goods filed their submissions in response to the initiation notification:
- M/s Rajasthan Spinning Mills Ltd. through the Indian Spinner's Association
 - Indian Spinners Association and Ludhiana spinners Association also made their representations at different stages of the investigation.
- viii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- ix) The other Indian manufacturers of the subject goods i.e. M/s Vardhaman Acrylics Ltd and M/s IPCL, who had not initially participated in the investigation and joined as applicants for the review, were requested by the Authority for their cost as well as other relevant data for a broad based examination of injury and non-injurious price. Whereas M/s Vardhaman Acrylic subsequently submitted their cost data and joined the other applicants as a supporter of the application for review, M/s IPCL provided very limited information which has been taken into consideration to the extent found relevant.
- x) The Authority verified the information furnished by the domestic industry as well as the supporting party to the extent possible to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- xi) The Authority held a public hearing on 02.04.2004 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry, importers/ users of the subject goods and representative of the Delegation of European Union. None of the exporters from the subject countries however, appeared for the public hearing, except a representative of the Delegation of the European Union. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered by Designated Authority in this finding;
- Xii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts considered for these findings and basis of determination were disclosed to known interested parties vide general disclosure and confidential disclosures to parties involved vide letters dated 15th October 2004. Comments to the disclosures received from the interested parties have also been duly considered in these findings to the extent the arguments and claims made by various parties are substantiated with evidence and data;
- Xiii) **** In the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'

6. The product under consideration in the original investigation and the product attracting antidumping duty on the basis of the final findings of the Authority is "Acrylic fibre, both in shrinkable and non-shrinkable form, ranging from 1.5 Denier to 8 Denier and covered tow, top and staples fibres". The product is classified under ITC HS classification Nos. 5501.30 and 5503.30.

C.1 Views of Petitioners, exporters, importers and other interested parties**C.1.1 Petitioner's views**

7. The applicants have argued that the product involved in the present investigation is Acrylic Fibre, irrespective of its customs subheadings. Being a review investigation, the product under consideration in the present investigation has to be the same as it was in the original investigation. They have further argued that the scope of the product has also been settled by the Appellate Tribunal in this case and therefore, there is no scope for further deliberation on this matter

C.1.2 Views of the Exporters

8. There is no full cooperation from any of the exporters and this issue has not been addressed by any of them in their limited submissions.

C.1.3 Views of Importers and other Interested Parties

9. The Indian Spinners Association in its submissions before the Authority has argued:

- That the domestic industry has clubbed two different items viz. acrylic/modacrylic fibre having HSN No.5503.3000 and synthetic filament tow falling under Hearing No.5501.3000.
- While subject goods include two different and distinct items having two distinct trade classification numbers under Customs Tariff Act, data relating to the domestic industry with regard to price, production etc, relate to acrylic fibre only. This has totally vitiated the investigation.
- That it was admitted by the representative of the Domestic Industry during the public hearing that filament tow has to undergo a further process before it becomes fibre.
- That there is a difference of about Rs.8/- per kg. in the prices of the two. By taking the average price of tow and fibre originating/exported from the subject countries and at the same time, by taking the price of only fibre in respect of domestic industry, the price comparison gets totally vitiated, because the difference of about Rs.8/- per kg., in the prices of tow and fibre mars the comparison

- That while computing market share, the quantity of imports would include both fibre and tow in the case of imports, while it would include only fibre in the case of domestic industry. This vitiates the comparisons and yields misleading results.
- That by mixing up two items for purposes of import data and taking only one item for purpose of domestic industry, the whole enquiry has been vitiated.

10. In their post disclosure submissions the interested parties have again reiterated their stand on separation of tow and fibres on the grounds that acrylic fibre and tow are two separate and distinct items covered by two distinct ITC classifications and they have separate end uses. While tow is used as raw material in the knitting industry, fibre is used by the spinners working on cotton spinning system. Knitting yarn is used for the manufacture of knitted fabrics while spun yarn goes for manufacture of woven cloth. Therefore, it has been argued that quality, specification, pricing and consequently economics of these two products are entirely different.

C.2 Examination by the Authority

11. The Authority has carefully considered the views of the petitioners, exporters and importers, and other interested parties on the issue of the product under consideration and the like article including submissions made in response to the disclosure statement.

12. For the purpose of this investigation the product under consideration was 'Acrylic fibre, both in shrinkable and non-shrinkable form, ranging from 1.5 Denier to 8 Denier and covered tow, top and staples fibres'. The issue has been deliberated and settled appropriately in the final findings of original investigation itself and the subsequent CEGAT orders. Moreover, this being a sunset review investigation, the scope of the investigation is limited to the product already identified in the original investigation.

13. The products i.e. tow and fibre, are manufactured in the same manufacturing process though fibre requires minor incremental processing of crimping and cutting to staple lengths. The price differential is essentially due to the incremental process involved and the differential has been found to be marginal. For the purpose of this investigation weighted average cost of Acrylic fibre and tow has been taken for all comparisons of normal value and export price from the countries of exports. Therefore, the cost comparison of the domestic industry and that of the imports is considered to be fair and reasonable. The domestic industry also produces both, tow and fiber in different proportions depending upon the demand. This being a settled issue in the Appellate Tribunal also the Authority finds no reason to alter the product under consideration or the like article in any manner.

D INITIATION AND STANDING OF THE DOMESTIC INDUSTRY

14. The review has been initiated on the basis of a duly substantiated request submitted on behalf of the domestic industry in terms of Article 11.3 of the Antidumping Agreement read with Section 9 A (5) of the Acts, and the same has not been challenged by any of the interested parties. However, the Authority notes that standing is not an issue in a sunset review request.

E. ISSUES BEFORE THE AUTHORITY

15. Section 9 A (5) of the Act provides that the Authority, in a sunset review, is required to examine, whether the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. Therefore, the issues before the Authority are to determine:

- a) Whether Dumping is likely to continue or recur, if definitive duties are removed or expired;
- b) Whether Injury to the Domestic Industry is likely to continue or recur, if definitive duties are allowed to expire or removed.

On the basis of the above the Authority proceeds to examine these issues in the succeeding paragraphs.

F. CONTINUATION OR RECURRENCE OF DUMPING:

F.1 Applicant's Views

16. Quoting the US practice in their Sunset Review investigations, the applicants have argued that the following circumstances would lead to affirmative determination in a sunset review:

- a) Dumping continued at any level above 0.5% after the issuance of definitive duty order;
- b) Imports ceased after issuance of the order; Or
- c) Dumping was eliminated after the issuance of the order and import volumes declined significantly.

17. The applicants have also argued that existence of actual imports in the POI is not a pre-requisite in a sunset review investigation which is more of a likelihood test rather than an actual dumping and injury test. In this connection they have quoted the decision of the EC in the matter of Polyester Staple Fibre from Belarus in which the said authority has continued the duty even when there was no imports from that country, holding that revocation of the duty would lead to recurrence of dumping. The applicants have also quoted Brazil; Import of Jute bags from India, sunset review case, where the duties have been continued even though there were no imports from India in the entire five year period.

18. The applicants further argue that the WTO Appellate Body, in the matter of US sunset review of antidumping duties on Corrosion Resistant Carbon Steel

Products from Japan, held that there is no obligation under the antidumping agreement for investigating Authorities to calculate or rely on dumping margins in determining the likelihood of continuation or recurrence of dumping.

19. In summary the arguments of the applicants are that inescapable conclusion in any of the following conditions would be likelihood of continued dumping or likelihood of recurrence of dumping:

- a) In case the product has been exported to India from the subject countries at prices below normal value in the relevant period;
- b) In case exports of the product have ceased after imposition of Antidumping Duty but the exporting country producers continue to export the products at dumped prices in other countries.

F.2 Views of exporters, importers and other interested parties

20. The Indian Spinner's Association in its submission has argued that the domestic industry should have relied on the actual transaction data reported in reputed trade journals published in the subject countries for estimation of the normal values in the countries of exports rather than the price data reported in Technon. They have questioned the standing and reputation of Technon regarding reliability of data published by it. They have also argued that the Technon data shows the average price for a region which may not be representative for the countries involved. They have also questioned reliance of the petitioners on the Textile Handbook 2003 for the purpose of prices in Japan.

21. They have further argued that in the case of Portugal, its proximity to Spain and Italy does not imply that the same price would prevail in Portugal also, which prevails in Spain and Italy. Interested parties have argued that simply because, European Union is a customs union, it does not mean that in all Member-countries, wage rates, power tariff and other elements of cost are the same and, therefore, cost of production is the same. Therefore, there is bound to be difference in the prices of different producers.

22. In their post disclosure submissions the interested parties have again reiterated their stand on acceptance of the Technon data and also stated that they have not been provided a copy of the same though these are published public documents to comment on the limitations and shortcomings in those data.

23. The exporters from Japan in their post public hearing submission have urged the authority to fix normal value for them based on their questionnaire response. They have also raised the issue of data anomaly in the monthly import data as compiled by DGCI&S and submitted by the applicants.

24. Interested parties however, have not countered the arguments raised by the petitioners regarding the standards and scope of sunset review investigation based on international practices.

F.3 Examination by the Authority

25. The Authority notes that interested parties, while arguing against use of the information from the secondary sources as produced by the petitioners, have not submitted any useful information about the domestic prices in these countries. During the public hearing itself the interested parties were asked to make any reliable information in this regard available to the authority. The Technon news letters which are available in the public domain are easily available to the interested parties dealing with the same product. However, copies of the news letters as produced by the applicants were also placed in the public file for inspection by all interested parties. Therefore, the authority finds no justification in the arguments raised by the interested parties in this regard.

26. The responding exporters from Japan have not fully cooperated with the Authority and did not offer themselves for verification. In the absence of cooperation from them their data could not be relied upon and authority had to resort to facts available. In view of the above facts available method for determination of dumping margin for Japan was resorted to in terms of Article 6.8 of the Agreement. As far as their arguments regarding the import data is concerned it is noted that reconciled transaction-wise annual import data of DGCI&S has been relied upon for all determinations in this case.

27. The Authority has noted the arguments made by the applicants on the methodology and practices adopted by various Authorities in their Sunset Reviews and the relevant WTO jurisprudence on the subject and have examined the issue of continuance and likelihood of recurrence of dumping to decide the matter in this case.

F.4 Continuance of Dumping: Determination of Normal Values, Export Prices and Dumping Margins

28. As a first step to determine whether dumping has continued during the period in which the duty was in force, particularly the POI, the Authority determined the normal value, export price and dumping margin for individual countries of exports.

29. The Authority notes that none of the exporters from Spain, Portugal and Italy has provided any information and cooperated in the investigation in order to enable the Authority to determine the normal value and export price of the subject goods from these countries. The exporters from Japan, after their initial partial cooperation, have not responded to subsequent queries and the verification requirements. Therefore, the Authority is forced to ignore their data for the purpose of this investigation and proceeds to determine dumping margin on the basis of facts available in terms of Rule 7(8) of Antidumping Rules read with Article 6.8 of the Agreement.

F.4.1 Normal Values

30. In the absence of any cooperation from any exporter from the subject countries the Authority has relied on facts available method to determine the normal value and/or constructed the normal value in the countries of exports.

Para 7 of the Annex II to the Agreement on Antidumping provide that:

"if the authorities have to base their findings, including those with respect to normal value, on information from a secondary source, including the information supplied in application for initiation of investigation, they should do so with special circumspection. In such case, the authority should, where practicable, check information from other independent sources at their disposal, such as published price lists, official import statistics and customs returns, and from the information obtained from other interested parties during the investigation. It is clear, however, that if an interested party does not cooperate and thus relevant information is being withheld from the authorities, this situation could lead to a result which is less favorable to the party than if the party did cooperate".

31. The applicants have submitted copies of Tecnon Orbichem, a monthly news letters in the Fibres & Intermediate Consulting Services, published from London, for the relevant periods in the POI. The news letter publishes quarterly data on trade in the above products, along with price trend in different markets. Though the interested parties have objected to use of this data none of the interested parties have brought any other relevant information before the Authority to refute the price trends published in these news letters. In the absence of any other reliable data on the home market prices in the exporting countries, this published data has been relied upon for the purpose of determination of home market prices of the subject goods in the subject countries.

32. The interested parties in their post disclosure submissions have questioned the method of determination of normal values, export prices and adjustments adopted by the authority and have *inter alia* argued that:

- (i) if Technon prices are the starting point, prices in the country has to be determined taking into account difference in wage rates, power tariff rates, interest rates etc. and denier differences in the case of Japan.
- (ii) From the market rates given in Tecnon, amounts towards excise duty, trade margin, transportation, other taxes, etc. will have to be deducted to arrive at the mill gate price of the fibre in the country of origin.
- (iii) Inland transportation and handling should not be deducted from CIF price for purposes of comparison of Normal value with export price.

33. These arguments of the interested parties have been carefully examined. However, none of these parties have provided any useful information on the prices and information on adjustments proposed by them. In the absence of reliable information from the interested parties, including the exporters in the subject countries, the Authority has resorted to facts available method of determination of normal value in those countries and adjustments to the export prices to the extent possible.

34. However, the arguments of interested parties that the published data of Technon might be reflecting the wholesale price of the commodity in the market and not the ex-works price of the commodity, merits consideration. Therefore, a term of trade and level of trade adjustment has been made on these prices to arrive at the ex-works normal value in the countries of exports assuming that the reported prices are at wholesale level and a commission of 3% and an additional selling and general expenses of 2% are incurred in these transactions. Accordingly the following determinations have been made.

Normal value: Spain, Portugal and Italy:

35. For the purpose of home market prices in the European Countries (Spain, Portugal & Italy) in this case, the quarterly prices of the Acrylic fibre in the West European Market as reported in this news letter has been accepted. In the absence of prices in the individual countries the prices published in the news letter appears to be the best that can reflect the home market price in these countries. Moreover, it is noted that the countries involved being part of the same customs union the prices in these markets will be more or less uniform. The details of the published data are as follows:

Prices \$/per Ton										
Product Description	Jul-02		Oct-02		Jan-03		Mar-03		Average	
	High	Low	High	Low	High	Low	High	Low	High	Low
Acrylic Fibre Tow Undyed	1610	1559	1678	1658	1846	1793	1858	1825	1748	1708.75
Average Price for the Year										
1728.38										

Spain, Portugal and Italy:

Selling Price (High)	: US\$1748 Per Ton i.e. US\$1.74 Per Kg
Selling Price (Low)	: US\$1708 Per Ton i.e. US\$1.70 Per Kg
Average Selling Price	: US\$1728 per Ton i.e. US\$1.728 Per Kg
Adjustments	: US\$86.4 per Ton i.e. US\$0.864 Per Kg
Normal Value	: US\$1641.6 Per Ton i.e. US\$1.641 Per Kg

Normal Value: Japan

36. M/s Japan Exlan had furnished its home market sales prices in Japan, but subsequently did not cooperate with the Authority and the data could not be verified. In the absence of verification of their cost of production the normal value of the product in Japan in the ordinary course of trade could not be determined based on the exporter's data. It is also noticed that substantial domestic sales of this exporter are to their affiliated parties i.e. their own yarn business. Therefore, in the absence of complete verification of their affiliated party transactions, the data could not be accepted. The other exporter i.e. M/s Marubeni Corporation is only a trader involved in exports to India and, therefore, in normal value determination in their case

depended upon the cooperation of the manufacturer. The applicants have enclosed a copy of the e-mail from the Indian Mission at Osaka providing the domestic price information of Acrylic fibre in Japan based on the data collected from JETRO, Osaka. The prices indicated in the report of Indian mission are as follows:

Prices March 2002: JYen350 per Kg = 2.7 US\$ @ Approx Yen 130 = 1Us\$
June 2002: JYen 350 per Kg = 2.7 US\$

These prices appear to be at the retail level or for some high end products which do not give a sound basis for adopting the same.

37. In the absence of any other reliable data on the home market sales price in Japan the published information in Tecnon has been relied upon. But the above publication does not indicate the prices in Japan in its Asian Prices segment. However, prices in China are available for only 3 Den fibres. In the absence of any other reasonable information, the prevailing prices in China was examined as the closest possible information on the domestic prices in Japan to work out the Normal value for Japan as follows:

Product Description		Prices \$/per Ton									
		Jul-02		Oct-02		Jan-03		Mar-03		Average	
		High	Low	High	Low	High	Low	High	Low	High	Low
Acrylic Fibre		1630	1580	1750	1730	1590	1510	1750	1740	1680	1640
Average Price for the Year											
1660.00											

38. This data was compared with the Japan's export price to China during April 2003 as reported in the same documents, which also shows an average price of US\$1.72 per kg. Therefore, the Authority hold that the above estimation is more appropriate and accordingly normal value in Japan is worked out as follows:

Selling Price (High)	: US\$1680 Per Ton i.e. US\$1.68 Per Kg
Selling Price (Low)	: US\$1640 Per Ton i.e. US\$1.64 Per Kg
Average Selling Price	: US\$1660 Per Ton i.e. US\$1.66 Per Kg
Adjustments	: US\$83 Per Ton i.e. US\$0.83 Per Kg
Normal value	: US\$1577 Per Ton i.e. US\$1.577 Per Kg

F.4.2 Export Prices

39. In the absence of actual export data from the subject countries the transaction-wise import data as compiled by DGCI&S has been examined after pruning the data of the unrelated products wherever necessary. Necessary adjustments towards inland and ocean freight, handling charges, insurance, commissions etc have been applied to the CIF import price as per the DGCIS data to arrive at weighted average ex-works export price in the country of export for both tows and fibers as follows:

F.4.3 Adjustments:**Spain, Portugal and Italy:**

40. Adjustments towards Ocean Freight, Insurance, Commissions and port handling in case of exports from European countries have been worked out as per the data provided by one of the cooperating importers in India i.e. M/s Rajastan Spinning Mills in its questionnaire responses and the inland transportation charges has been worked out on the facts available basis. Accordingly, the adjustments allowed for exports from these countries are as follows:

- (a) Net CIF Price US\$/Kg =*****
- (b) Net FOB Price US\$/Kg =*****
- (c) Adjustments towards Ocean Freight, Insurance and Handling = a – b = 0.047
- (d) Adjustments towards Inland transportation and handling = 0.004
- (e) Total Adjustments = c + d = 0.051 US\$/Kg

Japan:

41. As far as exports from Japan are concerned actual adjustment towards ocean freight, commissions, handling, insurance, as well as inland transportation charges, as provided by one of the Cooperative exporters in its questionnaire response has been used to arrive at net export price of exports from Japan.

- a) Ocean freight, Commission, insurance etc. : US\$ ***** /kg
- b) Inland transportation Charges : US\$ ***** /Kg
- Total Adjustments : US\$ 0.1358/Kg

(a) Net Export Price: Spain

42. As per DGCI&S import data the quantity and CIF Value of imports from Spain in respect of Tow and Fiber are as follows:

Item	Qty Kgs	in Value Rs	in Assess ed Rate Rs/Kg	Assessed Rate US\$/kg	CIF Rate US\$/Kg	Adjust ments	Net Export Price
Tow	754047	4669834	61.93	1.273	1.26	0.051	1.21
Fiber	33760	1799166	53.29	1.095	1.08	0.051	1.03
Weighted Average Net Export Price = US\$1.202 Per Kg							1.202

Exchange rate: Rs48.64=US\$1.0

(b) Net Export Price: Portugal

43. DIGCI&S data shows no imports of both tow and fiber from Portugal. Therefore, continuation of dumping from Portugal is not an issue.

(c) Net Export Price: Italy

44. As per DGCI&S import data the quantity and CIF Value of imports from Italy in respect of Tow and Fiber are as follows:

Item	Qty Kg	in Value Rs	in Asses sed Rate Rs/Kg	Assessed Rate US\$/kg	CIF Rate	Adjust ments US\$/Kg	Net Export Price US\$/Kg
Tow	316348	18016988	56.95	1.17	1.16	0.051	1.11
Fiber	1743601	112509834	64.32	1.32	1.31	0.051	1.26
Weighted Average Net Export Price = US\$1.233 Per Kg							1.233

Exchange rate: Rs48.64=US\$1.0

(d) Net Export Price: Japan

45. As per DGCI&S import data the quantity and CIF Value of imports from Japan in respect of Tow and Fiber are as follows:

Item	Qty Kgs	in Value Rs	in Assess ed Rate Rs/Kg	Assessed Rate US\$/kg	CIF Rate US\$/Kg	Adjust ments	Net Export Price US\$/Kg
Fibre	1326227	83511555	62.97	1.294	1.282	0.1358	1.1459
Tow	188760	11922129	63.16	1.298	1.285	0.1358	1.1498
Weighted Average Net Export Price = US\$ 1.1464 Per Kg							1.1464

Exchange rate: Rs48.64=US\$1.0

46. The above data has been compared with the questionnaire response filed by the exporters from Japan for a reasonable determination. On the basis of the questionnaire response filed by the exporters from Japan net export price from Japan works out to US\$***** per Kg, which is close to the export price derived on the basis of DGCI&S data. However, some of the transactions of the exporters are to their affiliated importer in India. In the absence of cooperation from both, the exporter and the importer in the situation of affiliated sales, determination of export price is not possible. Therefore, the net export price worked out on the basis of DGCI&S data has been found to be more appropriate.

F.4.4 Dumping Margins

47. Normal value so determined being an average normal value for the product types (Fibres and Tows) for the POI have been compared with the weighted average export prices as determined above for the purpose of determination of average dumping margins. Accordingly dumping margins work out as follows:

Country	Average Normal Value US\$/Kg	Average Net Export Price US\$/Kg	Dumping Margin US\$/Kg	Dumping Margin as % of EP
Spain	1.641	1.202	0.439	36.5%
Italy	1.641	1.233	0.408	33.09%
Japan	1.577	1.146	0.431	37.60%
Portugal	No exports during POI			

48. The Dumping Margins so determined has been found to be significant and above de-minimis.

49. Dumping margin for Portugal could not be determined, in the absence of any export from that country, during the period under investigation.

F.5 Likelihood of Recurrence of Dumping

50. The analysis in the earlier section shows that imports from Spain, Italy and Japan continue at dumped prices in spite of the antidumping duty in force. However, to examine the likely effect of withdrawal duties on the prices the authority analysed the current prices of imports from the subject countries against the background of the duty already in force. The current landed value of imports from these countries are found to be much below the reference price fixed by the Authority in the original investigation, as can be seen from the table below.

Duty In force (Reference Price Basis)		As per Final Findings RS	As Per CEGAT US\$	Average Landed Value 2002-03 Rs	Us\$
Japan	Ashahi				
	Chemicals	81.36	2.28	80.88	1.663
	Tyobo	77.09	2.23		
	Mitsubishi	79.57	2.16		
	All others	81.36	2.28		
Italy	All Exporters	61.12	2.30	68.34	1.405
Spain	All Exporters	82	2.08	74.32	1.528
Portugal	All Exporters	74.22	2.28	NIL	NIL
				NIL	NIL

51. The above table shows that landed values of exports from all countries continue to be below the reference prices fixed. Further, likelihood of dumping is to be analysed with reference to the spare capacity in the countries involved. In this regard in the absence of any other data/information the conference report of Technon Orbichem:- 7th Asia Fibre markets (Shanghai, 17th-18th June 2004) has been relied upon.

52. The above report shows that though there is a huge gap between the capacity and production all over the world, production, both in West Europe and Japan, has been reduced while East Asia shows a huge jump in production. Therefore, rationalization of capacities in the subject countries indicates that there may not be enough spare capacity in these countries which can be utilized to continue to dump in India on marginal cost basis. As far as **Japan** is concerned, two major producers i.e., Asahi and Kanebo have stopped production. However, Japan has been a major exporter of Acrylic fibres to China with a quarterly export of about 55000MTs.

53. The report also suggests that two Acrylic fibre plants i.e Montefibre's Ottana plant and Fisipec's Barcelona plants have been closed recently. Therefore, as far as Spain is concerned, the only large producer in that country has closed and therefore, there is no likelihood of recurrence of dumping from that country though the POI data shows current dumping.

54. Major producer and exporter from **Portugal** i.e. M/s Fisipec Barcelona S.A., has intimated the Authority that they have decided to leave the Indian market and therefore, did not wish to participate in the proceedings. The domestic industry in its post disclosure statement has confirmed that after closure of FISIPEC's Spain plant, this company is catering to the domestic market from its Portugal plant and therefore, do not have sufficient spare capacity to export. Therefore, likelihood of dumping from Portugal in the future is not foreseen.

55. In their post disclosure submissions the applicant domestic industry has submitted that though they do not disagree with the Authority that there appears little threat of continued dumping from Spain, Portugal and Italy, given closure of a number of plants in Europe, they disagree with the Authority that there is a huge gap between the production and capacity world over. They have accepted the fact that there is very little likelihood of dumping continuing from Spain, Portugal and Italy. On the other hand they have pleaded that while they are not much concerned about the possible continuance of dumping from Europe, because of overall decline of exports from Europe to the entire world market, they have argued that volume of exports from Japan is very huge and there is a strong likelihood continuation of dumping from Japan.

56. The authority has looked at the World Trade Atlas data for the years 2001, 2002 and 2003. This data showing the export from the subject countries to the entire world during the years 2001, 2002 and 2003 shows the following trend:

Country	2001	2002 World Exports	2003
Spain	7419	8793	6380
Italy	7059	6937	4645
Japan	314530	321213	270622

This indicates that total export from Spain and Italy to the world market is very insignificant. However, Japan continues to have a huge export volume in the world market despite closure of two of its units. Various reports quoted earlier also indicate that Japan has been a major exporter of Acrylic fibres to China with a quarterly export of about 55000MTs. However, saturation in Chinese demand is likely to create a glut in demand for Japanese producers and the spare capacity may be used to dump in India. Therefore, the applicants have argued that there is a strong possibility or likelihood of continuation and/or recurrence of dumping from Japan.

57. Various arguments raised by the applicants and other interested parties on the likelihood of continuation of dumping from the subject countries and the capacity rationalization as well as volume of exports from these countries have been examined. The facts brought before the authority indicates that the volume of exports from Spain, Portugal and Italy in last several years indicate that these countries do not have sufficient capacity to dump and therefore do not cause a threat to Indian Industry in the near future. However, Japan seems to have huge spare capacity and volume of exports to world market, China constituting about 50% of the total volume of exports. Various reports indicate that China has built up substantial capacity in last few years and with the built up of domestic capacity in China, likelihood of dumping into India from Japan becomes very high. On the basis of the above analysis the Authority holds that though dumping has continued from Spain, Italy and Japan during the period under investigation, there is no likelihood of continuation or intensification of dumping from Spain, Portugal and Italy if the duties are withdrawn. However, the same does not appear to be the case as far as Japan is concerned.

G. INJURY DETERMINATION

58. As in the case of dumping determination, the injury analysis in case of a sunset review is required to examine whether Injury to the Domestic Industry is likely to continue or recur if definitive duties are allowed to expire or removed.

G.1 Cumulative Assessment of Injury

59. The Authority notes that this is a sunset review of the measure already in force and examined the issue of cumulative assessment of injury to the domestic industry on account of simultaneous dumping from the subject countries, in terms of Annexure II (iii) of the Antidumping Rules and holds that the conditions specified in the said Rules are satisfied in this case for cumulative assessment.

G.2 Continuation of Injury

G.1.1 Views of the Domestic Industry

60. The domestic industry has pleaded that the injury to the domestic industry continues in spite of the protection of antidumping duty available to them due to continuation of dumped imports from many sources. They have *inter alia* argued:

- That they have suffered injury due to dumping from various countries, including the present countries, investigations against which are either under progress, or antidumping duties are in force.
- That the domestic industry has been suffering for a long time due to dumping from various sources one by one. Therefore, the injury and the economic parameters indicating existence of injury is required to be seen in the light of existing duties and on-going investigations.
- That the imports of subject goods from various countries (including the subject countries) have increased significantly in absolute terms in spite of imposition of antidumping duty.
- Share of imports of the subject goods from the subject countries has increased in relation to demand of the product in India despite antidumping duty already in force.
- Share of imports of the subject goods from the subject countries has increased in relation to production of the domestic industry.
- That though there is a marginal increase in the selling prices of the domestic industry it is due to the fact that the cost of production has increased and the domestic industry has started its recovery due to antidumping duty protection after suffering losses for a longtime due to prolonged dumping.
- That landed prices of imports from subject countries are significantly lower than the selling prices of the domestic industry, undercutting the domestic industry's prices significantly.
- That the Landed price of imports is below the cost of production of the domestic industry thereby causing significant price underselling.
- That the domestic industry has lost significant sales volume and market share
- That the selling price of the domestic industry is below its cost of production.
- That even though the losses have declined it should be seen in the light of the antidumping protection and significant past losses. Though the cash flow has improved the domestic industry continues to suffer financial losses.
- That the dumped imports have forced the domestic industry to curtail its employment level
- That productivity has improved due to increase in production and reduction in employment level.
- That even when the market is growing, the growth of the domestic industry has been negative due to dumped imports.
- That all parameters collectively establish that the domestic industry has suffered material injury due to dumped imports from the subject countries and injury to the industry would intensify if the duties are revoked at this stage.

61. In their post disclosure submissions, the applicants have argued that the improvement in certain parameters is due to imposition of antidumping duties on a number of sources. They have further argued that should the duties be withdrawn the domestic industry would again suffer injury. They have further argued that for the purpose of price undercutting and underselling determination allowance should be made from the landed value, for commission paid by the foreign producers to agents in exporting and/or importing country.

62. The applicants have also argued that the imports from sources attracting antidumping duty should be examined to see whether these imports are actually antidumping duty paid imports or imports under duty exemption schemes. Since these imports are mostly duty exempted imports under various schemes, the landed value of these imports without antidumping duty is relevant for price undercutting and underselling analysis.

G.2 Views of the exporters, importers and other Interested Parties

63. The Indian Spinner's Association and Ludhiana Spinner's Association and the exporters from Japan in their respective submissions have *inter alia* argued:

- That the domestic industry has clubbed acrylic fibre and tow so far as imports are concerned and has taken the domestic sales figures of only acrylic fibre
- That although capacity has been claimed to remain stagnant in the short period, production has increased substantially and currently it is running above the capacity, therefore, not a sign of injury.
- that acrylic fibre produced by the domestic industry has to compete with other fibres produced or manufactured in India, which might be preferred by the consuming industry on the basis of change in the pattern of demand, price angle etc. In other words, there is no reserved market for any fibre, whether polyester or viscose or acrylic or cotton or any other fibre. The domestic industry has thus to stand in competition with other producers or manufacturers in India.
- that exports have suddenly jumped from a level of 320 tons per annum in earlier years to 5176 tons in 2002-2003. Competition from other fibres produced in India and exports has impacted sales in 2002-2003, despite a rising growth in the previous years. Therefore, this is certainly not a sign of injury from imports.
- That while Indian Petrochemicals Limited (IPCL) and Consolidated Fibres and Chemicals could improve production and Vardhaman could maintain it, two units, namely, Indian Acrylics and Pashupati Acrylon have reported drastic reduction.
- that the cost of production of Indian Acrylic and Pashupati Acrylon would be much higher in the year under review, as they are not harnessing their capacity properly, which increases the average cost of production of the industry. Thus, industry averages are vitiated and the study of trend in average selling price, cost of production, profit/loss are also vitiated.

- That when three units could do better and two units could not fare well, it means that the problem is not with imports, but it is due to own difficulties of those two units.
- That the calculations given by the domestic industry are wrong because imports include tow and fibre, whereas indigenous production is of fibre only.
- The average selling prices of the domestic industry are higher because of higher cost of some units, which are reporting decline in production due to their own deficiencies.
- That the domestic industry is exporting acrylic fibre at about Rs.65.87 per kg.
- that all statements with regard to price suppression/depression and price undercutting and price underselling are totally wrong because the imported prices are for tow and fibre while Indian prices are for fibre only.
- the rate of return on capital employed assumed is very high and therefore should be worked out on the basis of profit and loss figures and not on the basis of any norm.
- that the domestic industry should realize Anti-dumping Duty is an instrument for correcting market distortions and not for protecting the inefficiencies of the domestic industry.
- That due to the clubbing of acrylic fibre and tow in the case of imports and consideration of only acrylic fibre in the case of indigenous production by the domestic industry, all comparisons are vitiated and distorted and conclusions are misleading and wrong;
- That data for determination of normal price for Italy, Spain and Japan are patently wrong and unreliable and cannot be made use of for a tariff inquiry;
- That there are no imports from Portugal and the fear of likely imports is imaginary having no basis and is frivolous.
- That Parameters of capacity and production show no injury;
- That parameter of sales requires proper consideration, as stated earlier, to appreciate what influences sales. If the influencing factors are identified, it will be noted that import is not a cause for decline in sales;
- That parameters of market share, price undercutting, price suppression/depression are influenced by the clubbing of tow and fibre in the case of imports and consideration of only fibre in the case of domestic industry.

64. In summary the interested parties have argued that the domestic industry has improved its performance and suffers no injury at the moment and injury if any is

due to their own inefficiencies and therefore, cannot be attributed to the imports from these sources.

65. The interested parties have further reiterated their arguments in their post disclosure submissions and submitted that export sales by the domestic industry should also be added to the domestic industry to analyse the effect of imports on domestic industry. They have further confirmed that the imports are taking place under the duty free import schemes. They have further argued that for the purpose of price undercutting analysis the import price at the consumers gate should be worked out after adding transportation cost. They have also questioned the price suppression and depression analysis on the grounds that the cost of production of the domestic industry is high because of their uneconomic size and other managerial inefficiencies. They have reiterated their arguments on various parameters of injury to the domestic industry

G.3 Examination by the Authority

66. The Authority has taken note of various arguments raised by various parties in their submissions and issue of continuation of injury to the domestic industry has been examined in the light of various arguments made before the Authority. The issue of number of investigations and antidumping duties in force against the subject goods imported from various countries has also been examined.

67. It is noted that in all the previous investigations Acrylic fibre and tow have been treated as like products and a single dumping margin and injury analysis based on combined volumes and values of both the products have been found appropriate. The Authority also notes that the domestic industry produces tow and fibre in varying proportions depending upon the demand and their sales realization in respect of both the products have been verified during the investigation process. Therefore, the weighted average cost of production and sales realization of the domestic industry does not vitiate injury analysis and dumping margin comparison against the interest of other parties. The issue has also been addresses adequately under 'like article' determination. Therefore, there arguments raised by interested parties against combined analysis of tow and fibre are not found to be tenable.

68. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the Volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

69. For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

70. Since positive dumping margin has been established for the exports from Spain, Italy and Japan, entire exports from those countries has been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal links.

(A) VOLUME EFFECT:

Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

71. The effects of the volume of dumped imports from the subject countries as well as other countries attracting antidumping duty have been examined as follows:

i) Import Volumes and share of subject countries:

Quantity in MT

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Total Imports (Fibre+Tow)	14258	13967	9669	21093
Subject Countries Imports	4835	5092	3909	5743
Others with ADD	8436	7472	4709	12023
Total Imports with ADD	13271	12564	8618	17766
Others not with ADD	986	1403	1051	3326
% Subject Countries	34%	36%	40%	27%
% imports with ADD	93%	90%	89%	84%
% imports without ADD	7%	10%	11%	16%

Source: DGCI&S data

72. Since tow and fibre has been treated as like products all analysis has been done for the total volume of tow and fibre together. It is noted that the volume of imports from the subject countries remain high in spite of the antidumping duty in force against them though in terms of its share in the total volume of imports has dropped from 34% in the base year to 27% during the POI after showing an upward swing in the previous year i.e. 2001-02. It also appears that 7% drop in share of imports from subject countries and 9% drop in share of imports from all sources attracting duty have been taken over by imports from other sources not attracting duty.

ii) Demand, Output and Market shares

73. It may be noted that tow and fibre are produced in the same production line and product mix depends only on the demand for the two products. Therefore, total capacity and all other parameters have been worked out for the combined production of tow and fibres as follows:

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Capacity Domestic Industry *	MT	89500	89500	89500	89500
Capacity of Other Producers**	MT	24000	24000	24000	24000
Total Capacity	MT	113500	113500	113500	113500
Production Domestic Industry	MT	81592	77461	81754	82742
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100.00</i>	<i>94.94</i>	<i>100.20</i>	<i>101.41</i>
Production others	MT	12607	21219	12231	20812
Total Production in the Country	MT	94199	98680	93985	103554

* Domestic Industry Consists of M/s Indian Acrylics, M/s Consolidated Fibre, M/s Pashupati Acrylon and M/s Vardhaman Acrylic

• ** Others consists of M/s IPCL

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Capacity Utilization DI	%	91.16%	86.55%	91.34%	92.45%
Overall domestic Capacity Utilization including others	%	82.99%	86.94%	82.81%	91.24%

74. Average Capacity utilization of the domestic industry has remained above 90% though some of the units have been performing above their rated capacities. The overall capacity of the industry as a whole, taking into account the production of the other producers the capacity utilization has shown definite improvement from 83% in the base year to 91% in the POI.

iii) Sales by Domestic industry

75. Domestic sales of the applicants have shown a perceptible decline compared to the base year. However, though the sale by other producers has increased marginally, the total sales of the industry as a whole shows decline and the space has been occupied by the imports.

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Sales of DI	MT	83000	75233	86053	76530
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100.00</i>	<i>90.64</i>	<i>103.68</i>	<i>92.21</i>
Sales by other producers	MT	16346	15084	17866	18981
Total Domestic sales	MT	99346	90317	103919	95511
Export Sales by DI	MT	428	135	425	2170
Total Imports (Fibre+Tow)	MT	14258	13967	9669	21093

iv) Demand and Market shares

76. The demand and corresponding shares of various segments have been analysed in the table below. The analysis shows that the increase in demand of the product is not very substantial over the base year and previous year. However, marginal increase in demand has been cornered by the imports from various sources including dumped imports from the subject countries. Total imports from the subject countries have increased marginally in spite of the duty being in force. Imports as a percentage of total demand has increased by 5.5% compared to the base year and 7% compared to the previous year, and the import from subject countries as a percentage of total demand has shown a marginal increase of less than 1% from base year and about 1.5% from the previous year. Therefore, volume effect of dumped imports from the subject countries appears to have a very marginal impact on the domestic industry. However, this is to be seen in the back ground of antidumping duty already in force against the subject countries.

77. The data however, indicates that sales of the domestic industry as a ratio of its production have fallen to 92.5% indicating the inability of the domestic industry to off load its production in the market.

Total Domestic Demand (sales + Imports)	MT	113604	104284	113588	116604
--	-----------	---------------	---------------	---------------	---------------

Market Share of Imports

Total Import as % of total Demand	%	12.55%	13.39%	8.51%	18.09%
Import from subject countries % of total demand	%	4.26%	4.88%	3.44%	4.93%
Imports from other Countries as % of total Demand	%	8.29%	8.51%	5.07%	13.16%

Market Share of DI

Market Share of DI as % of total Demand	%	73.06%	72.14%	75.76%	65.63%
Market Share of others producers as % of total Demand	%	14.39%	14.46%	15.73%	16.28%
Sales of DI as a % of production	%	101.73%	97.12%	105.26%	92.49%

(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

78. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject countries have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

79. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry (worked out after normating the costing information of the Domestic Industry and supporting producer) have been compared with the landed cost of imports from the subject countries.

(i) Price undercutting and underselling effects

80. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from each of the countries under investigation over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. The arguments by the interested parties to include inland freight to the landed value to work out price at the consumers gates for comparison with NSR of domestic industry and claims of domestic industry to adjust notional commission from the CIF for the same purpose have not been found to be logical for a fair determination of price underselling and undercutting.

81. The landed value of imports has been calculated by adding applicable basic customs duty to the assessable value reported in the DGCI&S data of import prices from the subject countries.

82. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

83. For the purpose of price underselling determination the weighted average landed price of imports from each country has been compared with the Non-injurious selling price of the domestic industry determined for the POI and cost of production for the remaining years.

Rs./ Kg				
	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03 POI
NSR (Indexed)	100	121	101	111
COP	100	139	115	114
NIP				*****
Landed value				
Japan	100	116	111	113
Spain	100	110	115	111
Italy	100	107	104	0.93
Portugal	Nil	Nil	Nil	Nil

Price undercutting without ADD			
Japan			-0 to 5%
Spain			-0 to 5%
Italy			5 to 15%
Portugal			
Price Underselling			
Japan			5 to 15%
Spain			5 to 15%
Italy			15 to 25%
Portugal			

Landed Value others (Indexed with reference to Landed value of Japan)	
Belarus	87.32
Average Landed Value from Countries not attracting duty	85.62
Average Landed Value from other Countries attracting duty	101.05

84. The price undercutting (without considering the antidumping duty in force) has been found to be negative in case of Japan and Spain and positive for Italy. However, price underselling has been found to be positive for all the three countries.

(ii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

Price Suppression

85. The price suppression effect of the dumped imports have also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject countries.

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Cost of Production of DI	Rs./MT	****	****	****	****
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100.00	139.32	115.10	114.27

Net Sales Realization of DI	Rs./MT	****	*****	*****	*****
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100.00	121.17	83.76	110.12

86. The cost of production of the subject good depends upon the prices of highly fluctuating petroleum based raw materials like Acrylonitrile and others. While the cost of production has gone up by about Rs9.00 per kg during the POI compared to the base year, with the exception of an unusual year of 2000-01, the domestic industry has been able to raise its NSR by Rs7.00 per kg only. Therefore, it appears that the domestic industry has been prevented to raise its prices to recover the

rising cost of production due to the lower landed value of dumped imports from the subject countries and imports from other sources.

Price Depression

87. Though the landed value of the imports from Japan (without taking into account antidumping duty payable) is above the COP and NSR of the domestic industry, lower landed value of the imports from Spain and Italy seem to have depression effect on the domestic prices as the domestic industry appears to have been forced to lower its prices in order to retain its market share. At the same time the price trend of the domestic industry is to be seen with reference to the landed value of imports from other sources. It is also seen that the imports from sources attracting only fixed duty and import from sources under investigation (Belarus) have depressing effect on the price of the domestic industry and the industry has not been able to raise its prices though antidumping duty against the subject countries provided the domestic industry a better cushion for increasing its prices to remunerative levels.

G.4 Examination of Injury Parameters

88. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry the parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed. In this respect the following mandatory parameters were examined.

i) Output and Capacity utilization

Quantity in MT

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03 (POI)
Capacity of DI	89500	89500	89500	89500
Capacity of Others	24000	24000	24000	24000
Total Domestic Capacity	113500	113500	113500	113500
Production of DI	81592	77461	81754	82742
Production of others	12607	21219	12231	20812
Total Domestic Production	94199	98680	93985	103554
Capacity utilization of Domestic Industry	91.16%	86.55%	91.34%	92.45%
Overall domestic Capacity Utilization	82.99%	86.94%	82.81%	91.24%

89. There has been no expansion of capacity during the injury investigation period and the production of the domestic industry as well as the capacity utilization shows marginal improvement. However, performance in terms of output and capacity is also to be seen along with the sales.

ii) Decline in sales

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Production of the DI	81592	77461	81754	82742
Sales of the DI	83000	75233	86053	76530
Exports by DI	428	135	425	2170
Total Sales of DI	83428	75268	86478	78700
Total Domestic sales	99346	90317	103919	95511
Sales of applicants as a % of production	101.73%	97.12%	105.26%	92.49%

90. The sales of the domestic industry (applicants as well as all domestic producers taken together) shows significant drop compared to the base year as well as the previous year. It is clear that the industry has not been able to discharge the output into the market and there is a decline in sales of the industry against same output level because of the price effect of imports. Total sales of the domestic industry shows declining trend compared to the base year. This decline of sales, seen with the marginal rise in the cost of production, and attempt by the domestic industry to increase its NSR to improve its bottom line, indicates that any attempt by the industry to raise its prices to a remunerative level leads to loss in volume terms because of the dumped price level prevailing to which the industry has to align in order to retain its market share.

iii) Market share and Growth of the industry**Quantity in MT**

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Total Domestic Demand (sales + imports)	113603	104284	113587	116603
Domestic Sales of DI	83000	75233	86053	76530
Market Share of DI as % of total Demand	73.06%	72.14%	75.76%	65.63%
Import from subject countries % of total demand	4.26%	4.88%	3.44%	4.93%
Market Share of others producers as % of total Demand	14.39%	14.46%	15.73%	16.28%
Market share of Imports from other Countries as % of total Demand	8.29%	8.51%	5.07%	13.16%
	100	100	100	100

91. There is only a marginal increase in the total demand of the product in the country as demonstrated in the table. However, total sales volume of the domestic industry shows a negative growth compared to the previous years. Sales as a % of production has also shown a declining trend indicating inventory built up. Market share of the domestic industry shows a significant decline of about 7%. At the same time imports from the subject countries as a percentage of demand shows 1.5% increase over the previous year and about 0.5% increase over the base year. Other

domestic producer has gained a very marginal market share. Major part of the market lost by the domestic industry seems to have been taken over by imports from other sources, while the imports from the subject countries have also cornered a small share of this demand.

92. There has been no expansion or capacity addition by the domestic industry as the existing capacity in the country has not been fully utilized and the prevailing prices do not appear to be remunerative enough to add further capacity in spite of the fact that there is a marginal rise in demand for the product.

iv) Productivity

93. Productivity of the domestic industry has been measured in terms of its labour productivity of the output and it has been noticed that the productivity has improved because of reduction of the employment level and marginal increase in production. However, improved productivity has not resulted in commensurate profitability.

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Domestic Production	81592	77461	81754	82742
No of Employees	1875	1859	1780	1712
Productivity (Production/ employee)	43.52	41.67	45.93	48.33
Productivity per day (MT)	223.54	212.22	223.98	226.69

iv) Profits and actual and potential effects on the cash flow

94. Though the cash flow of the domestic industry as whole has improved, the industry continues to suffer loss during the investigation period. The industry has not been able to realize a fair price to recover its cost due to prevailing price of dumped imports.

Indexed

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
NSR Per MT (DI)	100.00	121.17	83.76	110.12
COP Per MT (DI)	100.00	139.32	115.10	114.27
Profit/ Loss Per MT	100	-6453	-4825	-798
Cash Loss/ Profit (Rs in lakhs)	100	-12500	-12311	-2767

v) Employment and wages

95. The employment level has declined by about 8% compared to the base year. But the expenses on account of salary and wages have increased by about 14%. However, increase in the expenses towards salary and wage is in tandem with the increase in production (about 14%) during the comparable periods.

3398GI/04-10

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Employees	Nos.	100	99	95	91
Wages paid to employees	Rs. Lacs	100	110	112	115

vi) Return on investment and ability to raise capital

96. The return on capital employed by the domestic industry shows deterioration compared to the base year. However, compared to the previous two years the return on capital employed shows improvement, thereby indicating that the industry is in the process of recovery. However, positive rate of return is on account of only one domestic producer i.e. M/s Indian Acrylic Ltd., which has shown profit during the POI after posting losses for last several years.

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
ROCE - NFA	%	100	-9.41	-13.75	67.42

vii) Investment

97. There has been no capacity addition or any fresh investment by the applicants during the investigation period.

viii) Magnitude of Dumping

98. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can injure the domestic industry shows that the dumping margin determined against the countries named, for the POI, are substantial, even when the antidumping duty is in force.

ix) Factors affecting prices

99. Change in cost structure if any, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. Acrylic fibre is an economical substitute for wool and has several application in apparel, household and industrial areas and continues to remain so because, the price of the substitute product remains high. Therefore, its demand as a substitute for wool has not undergone any significant change to affect the prices. Major proportion (about 70% of total domestic production and sales) producers are party to this investigation and the price of other producers, also move within the same price band. Therefore, domestic competition does not appear to affect the prices of the domestic industry to a very significant extent.

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Selling Price of other Indian Producers	Rs/ MT			
IPCL	100	78.01	101.84	124.02
NSR of DI	100.00	121.17	83.76	110.12

x) Inventories

		1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100.00	156.94	27.86	138.28
Inventory as a % of Total Sales	%	4.39%	7.62%	1.18%	6.43%

100. The inventory in absolute term and as a ratio of sales shows significant inventory build up indicating inability of the domestic industry to discharge its products into the domestic market.

G.5 Other Known factors and Causal Link

101. The exporters and other interested parties have raised several arguments in their written submissions during the course of the investigation which essentially argues that the domestic industry has improved its overall performance. They have further argued that while some of the constituents of the domestic industry have been performing well and making profit others are making losses due to their internal problems which has nothing to do with dumping from these sources. They have made of the following two arguments in their written submissions based on arguments made during the public hearing:

(a) As per the annual accounts/reports of the three petitioner companies, entire net worth of two has been eroded and they are in the process of applying to the BIFR authority. Even after definitive duties in force, one of the petitioners has become a sick company and the other is waiting to file its default status before the competent authority. Therefore, this implies improper management of the companies' affairs and the injury to the applicants has no relation to the imports from subject countries.

(b) While Indian Petrochemicals Ltd. (IPCL) and Consolidated Fibres and Chemicals could improve production and Vardhaman Acrylic could maintain it, two other units namely, Indian Acrylic and Pashupati Acrylon have reported drastic reduction. Therefore, cost of production of these two units would be higher vitiating the industry average. Since some of the units have not performed well it means that the injury is due to their own difficulties.

102. Both the issues have been examined, along with others, as a part of other factors analysis for determining the causal links between dumped imports and the injury suffered by the domestic industry. It is observed that the second issue raised is not factually correct. IPCL's improvement during the POI is due to a very low

performance level during the previous year. Pashupati Acrylon's production has in fact improved with above 100% capacity utilization.

103. As far as the first issue is concerned, it may be noted that the condition of the domestic industry is to be seen as a whole, including dumping from various other sources, cost of production and the price that it can command on the face of continued dumping. The cost of production in the domestic industry is also linked to the cost of inputs which are mostly imported and the price of these petroleum based chemicals have remained volatile. The fair selling price/ Non-injurious price determined has taken into account the inefficiencies that might have affected the cost and price of the domestic industry. Therefore, self inflicted injury due to inefficiencies as alleged has not been attributed to the dumping.

104. The interested parties have argued that in spite of antidumping protection the applicants are in the verge of becoming sick. However, it may be noted that antidumping duties against most of the other countries are on fixed duty basis. Therefore, circumvention of the duties by lowering the prices cannot be fully ruled out. In such a situation, it appears that the prices at which the goods have entered the market have not allowed the domestic industry to recover its cost, and hence continuation of injury cannot be attributed to the inefficiencies within the companies. It must also be noted that in spite of operating at above 100% capacity, some of the applicant companies have suffered losses, which indicates inflexibility in the cost structure and depressive effects of the dumped imports on the prices.

105. Having examined the issues raised by the interested parties some of the non-attribution factors laid down in the Rules have also been examined.

i) Volume and prices of imports from other sources

Qty in MT

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Total Imports (Fibre+Tow)	14258	13967	9669	21093
Imports from others sources				
attracting ADD	8436	7472	4709	12023
Import from other sources				
not attracting ADD	986	1403	1051	3326
Total imports from other sources	9422	8875	5760	15349

106. The Authority notes that dumped imports from the subject countries constitute about 27% of total imports and imports from all sources subjected to antidumping duty constitute almost 84% of the total imports, a drop of about 9% from the base year. Landed value of imports (excluding the antidumping duty applicable) from the sources attracting duty is much above the landed value of imports from sources not attracting duty. In fact weighted average landed value of imports from the countries not attracting duty is much below the NSR and COP of the domestic industry. It is also noted that a parallel investigation is in progress on alleged dumping of the subject goods from Belarus which accounts for more than

50% of the imports from all sources not attracting duty and the landed value from this country is about Rs66/- per Kg.

107. However, antidumping duty paid landed value of all imports from the countries against which duty is in force (which constitutes about 84% of total imports), is above the net sales realization of the domestic industry indicating a negative price undercutting at present. But Imports from the country under investigation separately i.e Belarus and other countries not attracting duty are at prices much below the landed value of imports from the subject countries. These imports taken together appear to have an overwhelming effect on the prices which has not allowed the domestic industry to raise its prices to remunerative levels. Therefore, volume and prices of imports from other sources appear to have more adverse effect on the domestic prices, significantly contributing to the current injury of the domestic industry than the imports from the subject countries.

iii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

108. The demands of the subject goods have shown marginal increase during the injury investigation period. However this does not give a clear pattern of change in consumption pattern which is likely to alter the demand pattern of the subject good in the country substantially. The marginal increase in demand has been taken over mostly by imports from other sources than the dumped imports from the subject countries.

iv) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

109. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. The petitioners constitute almost 70% of the capacity in the country. The other producers of the subject goods also operate within the same price band. Though major proportions of imports from various other sources are attracting antidumping duty, antidumping duty unpaid landed value of imports from these sources are within a very narrow band indicating severe competition between various sources for the domestic market. It appears that volume and prices of imports from all sources found to be dumping, including the subject countries, have cumulatively contributed to the injury of the domestic industry. Therefore, the current injury to the domestic industry cannot be attributed to the dumped imports from the subject countries alone.

v) Development of technology and export performance

110. World over acrylic fibres is manufactured using either dry technology or wet technology. Out of 5 producers in the country two producers' use dry technology and three use wet technology to produce the same product and their technology is up to date. In terms of technological standards and cost of operation there is no significant difference. Therefore, technological difference is not a factor affecting the performance of the domestic industry.

111. The exports of the product under consideration have increased substantially from the base year. In fact the exports are substantial only during the POI. The interested parties have raised a point that the exports by the petitioners are at low prices which might have caused injury to them. But the volume of exports is very small and the price difference is also not very significant to contribute substantially to the injury of the domestic industry.

vi) Productivity of the Domestic Industry

112. Productivity of the domestic industry in terms of labour output and daily output has shown substantial improvement. Therefore, productivity is not a factor which can be attributed to the injury of the domestic industry.

113. The domestic industry in its post disclosure submissions has argued that the requirement under article 3.5 of agreement is to segregate injury caused by import not sold at dumped prices. Since imports from Belarus are separately under investigation, the imports from Belarus constitute imports at dumped prices and therefore, are not required to be aggregated under Article 3.5. The authority has examined the issue and is of the opinion that while the imports from the other countries are under investigation, particularly, Belarus, are at dumped prices, the price undercutting and underselling effects of imports from the subject countries indicate that the current injury to the domestic industry if any is more prominent in respect of other sources than the subject countries.

114. The above analysis of injury parameters and examination of non-attribution factors indicate that though there is improvement in several parameters in the performance of the domestic industry they do suffer material injury in terms of drop in volume of sales and price suppression and depression due to the dumped imports from several sources including the subject countries. However, the landed values and volume of imports from subject countries indicate that current injury to the domestic industry is due mostly to the importation of the subject goods from several other sources simultaneously attracting antidumping duty or imported without duty. The dumped imports from the subject countries seem to contribute marginally to the material injury to the domestic industry at present because of the duty protection already available.

G.6 Determination of Non-injurious Price of the Domestic Industry

115. Non-injurious Price for the subject goods has been worked out by the costing division after a detailed analysis and scrutiny of information provided by the domestic industry. Weighted average Non-injurious price for the domestic industry has been determined by the Authority as Rs.***** per Kg.

G.7 Magnitude of Injury and injury margin

116. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from the subject countries and the injury margins have been worked out as follows:

	Rs./Kg			
Injury Margins	Spain	Portugal	Italy	Japan
NIP	****	****	****	****
Landed Value	****	****	****	****
Injury Margin	5 to 15%	NA	15 to 25%	5 to 15%

H. LIKELIHOOD OF CONTINUATION OR RECURRENCE OF INJURY

117. The authority has earlier determined that there is no likelihood of dumping continuing or recurring from Spain, Portugal and Italy. However, in the case of Japan possibility of continuation of dumping has been established in the earlier section. Therefore, the likelihood of continuation and/or recurrence of injury has been examined in this section on the basis of the above observations.

118. In the absence of clear guidelines for a likelihood test the factors laid down in Article 3.7 of the ADA have been examined for determination of likelihood of recurrence of injury. However, the domestic industry in its post disclosure submissions has argued that the parameters laid down under Article 3.7 of the agreement are not relevant for a likelihood test and this provision is meant for the threat of injury analysis whereas requirement under sunset is to examine whether revocation of anti dumping duty is likely to lead to continuance or recurrence of injury to the domestic industry. On the basis of the practices followed in other countries, they have suggested certain parameters for examining the likelihood of continuation or recurrence of injury to domestic industry. Quoting the World Trade Atlas data the applicants have *inter-alia* argued that while there is no likelihood of dumping and therefore, consequent injury due to imports from Spain, Portugal and Italy, on the face of their insignificant exports from these countries to the world market, Japan poses a serious threat because of its huge capacity, volume of exports to the world market and contraction of demand in their major exporting market i.e. China. They have further argued that non-cooperation and non-participation from the subject countries is because of the fact that the producers in this country are well aware of the fact of dumping and consequent injury to the domestic industry. Therefore, their non-participation in the review should be construed as an evidence of likelihood of intensified dumping and injury to the domestic industry should the duty be revoked. They have further argued that the imports have largely been reported under Advance License. This clearly implies that imposition of anti dumping duty largely prevented the Foreign Producer from selling the product on customs duty paid basis, because of imposition of anti dumping duty. Therefore, should the present anti dumping duty be revoked, large scale import under customs duty paid category are imminent.

119. The Authority has examined these arguments based on the information provided and also examined parameters laid down under Article 3.7 as follows:

(a) **Whether there is a significant rate of increase of dumped imports into the domestic market indicating the likelihood of substantially increased importation:**

Quantity in MT.

	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Subject Countries	4835	5092	3909	5743
Rate of Increase		5.3%	-23.24%	46.97%

120. It is observed that the dumped imports from the subject countries have increased significantly compared to the base years after showing a negative growth in 2001-02. However, major portion of these imports are from Japan. These volumes and rate of increase is also to be viewed in the light of duty already in force. Positive growth during the POI indicates that the import volume may increase substantially if the duties are revoked.

(b) **Whether there is sufficient freely disposable, or imminent, substantial increase in capacity of the exporters indicating likelihood of substantially increased dumped exports to the importing member's market, taking into account the availability of other export markets to absorb additional exports:**

121. Various reports quoted earlier shows that Europe and Japan are the two major producers of the subject goods accounting for nearly 45-50% of total world production. In the examination of likelihood of recurrence of dumping and it was observed that there is a considerable rationalization of capacities in the subject countries in the past few years and several production capacities in these countries have shut down.

	<u>Company</u>	<u>Year of Closure</u>	<u>Capacity</u>
1.	Asahi, Japan	2003	65,000 MT
2.	Montefibre, Italy	2003	90,000 MT
3.	Kanebo, Japan	2003	38,000 MT
4.	Fisipie, Spain	2004	68,000 MT

			261,000 MT

Source: 7th Asia Fibres Conference, 17th June 2004

122. The domestic industry has argued that closure of plants in Japan does not imply that Japan does not have excess capacity. They have submitted that Japan's domestic demand is much less compared to their total capacity and they have a huge surplus capacity of about 2,53,000 tonnes. The authority has examined these aspects on the basis of the reports referred above. These reports suggest that even after closure of one of the major producers, Japan has surplus capacity and this capacity is utilized to focus on exports, major portion of which is exported to China. China continues to be the major importing country of the product under consideration accounting for about 30% of total world demand of acrylic fibre and its demand was in excess of its capacities to absorb additional exports if any. These reports also suggest that China has built up its own capacity matching its domestic demand indicating that there could be a problem of over capacity in Japan. Therefore, while there may not be substantial excess capacity in European countries to continue dumping into Indian market, there is an imminent likelihood of continuation of dumping from Japan. It is also noted that the current prices from

Japan are much lower than reference price fixed in the original investigation and most of the imports are taking place under the duty exemption schemes. Therefore, once the duties are revoked the current price level may not hold and imports are likely to take place outside the duty exemption scheme also.

(c) Whether the imports are entering at prices which have significant depressing effect on the domestic prices, and would likely increase demand for further imports:

123. In the price suppression and depression analysis it has been indicated that the current prices at which the goods from the subject countries are entering the Indian market have marginal suppressing and depressing effect on the domestic prices. It is also indicated that import prices from other sources not attracting duty at the moment appear to have overwhelming impact on the prices than the landed value of imports from the subject countries because of the antidumping duty protection already in force.

124. However, the current level of price suppression and depression may not give clear indication in this case because of the fact that the duty is already enforced and the imports are taking place under duty exemption schemes.

(d) Inventories of the product being investigated:

125. Since none of the exporters in the exporting countries have responded to the investigation and inventory position of the product is not publicly available, this aspect could not be examined.

I. Conclusions

126. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current dumping and injury and likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury the authority concludes that:

- i) The dumping margins of the subject goods imported from Spain, Italy and Japan are substantial and above de minimis;
- ii) There is no likelihood of dumping to continue or recur from Italy, Portugal and Spain if the duties are revoked. However, there is a likelihood of dumping to continue or recur from Japan if the duties are revoked;
- iii) Though the domestic industry suffers marginal material injury at present the cause of the current injury is overwhelmingly the dumped imports from other sources not attracting duty at present;
- iv) Injury to domestic industry is not likely to continue or recur if the duties are revoked in respect of imports from Spain, Portugal and Italy.

However, injury to the domestic industry is likely to continue or recur if the duties are revoked in respect of imports from Japan;

J. Indian industry's interest & other issues

127. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

K. Recommendations

128. Having concluded that there is no likelihood of continuation of dumping and injury on account of imports from Spain, Portugal and Italy, the Authority finds no justification for continuation of the duty against these countries and therefore, recommends revocation of duty in force against these countries. However, in view of positive determination of likelihood of dumping and injury on account of imports from Japan, the Authority is of the opinion that continuation of the measure is required against imports from that country. However, considering the current level of dumping from that country and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from Japan in the form and manner described hereunder.

129. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury whichever is lesser, so as to remove the injury to the domestic industry. Considering that the duty in the original investigation was imposed on reference price basis the Authority recommends continuation of definitive antidumping duty, on all imports of subject goods originating in or exported from Japan, as the difference between the landed value and the reference price as indicated in Col 9 of the table below, if the landed value at the time of importation is below the value indicated at Col.9. For the purpose of this landed value of imports will be determined as the value of the goods as assessed by Customs plus applicable basic Customs duty.

Sl. No	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Reference Price	Unit of Measure	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)		
1	55033000 & 55013000	Acrylic fibre, both in shrinkable and non-shrinkable form, covering tow, top and staples fibres	ranging from 1.5 Denier to 8 Denier	Japan	Any	Any	Any	1681	MT	US\$
2	55033000 & 55013000	Acrylic fibre, both in shrinkable and non-shrinkable form, covering tow, top and staples fibres	ranging from 1.5 Denier to 8 Denier	Any	Japan	Any	Any	1681	MT	US\$

L. Further Procedures

130. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

131. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority